



भारत का राजपत्र

The Gazette of India

असाधारण

EXTRAORDINARY

भाग I—खण्ड 1

PART I—Section 1

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 287]

No. 287]

नई दिल्ली, बुधवार, दिसम्बर 8, 2004/अग्राहयण 17, 1926

NEW DELHI, WEDNESDAY, DECEMBER 8, 2004/AGRAHAYANA 17, 1926

वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय

(वाणिज्य विभाग)

(पाटनरोधी एवं संबद्ध शुल्क महानिदेशालय)

अधिसूचना

नई दिल्ली, 7 दिसम्बर, 2004

अंतिम जांच परिणाम

विषय : बेलारूस से एक्रिलिक फाइबर के आयातों से संबंधित पाटनरोधी जांच—अंतिम जांच परिणाम

सं० 14/5/2003-डीजीएडी.— वर्ष 1995 में यथासंशोधित सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 तथा उसकी सीमाशुल्क टैरिफ (पाटित वस्तुओं की पहचान, उन पर पाटनरोधी शुल्क का आकलन एवं संग्रहण और क्षति निर्धारण) नियमावली, 1995 को ध्यान में रखते हुए :

क. प्रक्रिया :

2. जांच के संबंध में निम्नलिखित निर्धारित प्रक्रिया का पालन किया गया है :-

- निर्दिष्ट प्राधिकारी (जिसे एतदपश्चात् प्राधिकारी कहा गया है) ने एक्रिलिक फाइबर मैन्यूफैक्चरर्स फोरम, नई दिल्ली से सहभागी कम्पनियों अर्थात् मैसर्स इंडियन एक्रिलिक्स लि., चण्डीगढ़, मैसर्स कन्सोलिडेटेड फाइबर्स और कैमिकल्स लि., कोलकाता, मैसर्स पशुपति एक्रिलोन लि., नई दिल्ली के जरिए बेलारूस (जिसे एतदपश्चात् संबद्ध देश कहा गया है) के मूल के अथवा वहाँ से निर्यातित एक्रिलिक फाइबर (जिसे एतदपश्चात् संबद्ध माल कहा गया है) के पाटन के बारे में एक लिखित याचिका प्राप्त हुई है जिसका समर्थन मैसर्स इंडियन पेट्रोकेमिकल्स एवं कैमिकल्स लि., बड़ोदरा और मैसर्स वर्धमान एक्रिलिक्स लि., लुधियाना ने किया है;
- याचिकाकर्ता द्वारा दायर आवेदन की प्रारंभिक जांच में कुछ कमियां पाई गईं, जिन्हें बाद में याचिकाकर्ताओं द्वारा ठीक कर दिया गया;
- प्राधिकारी ने भारत में स्थित संबद्ध देश के दूतावास को उपर्युक्त नियम 5 के उपनियम (5) के अनुसार जांच आरंभ करने से पूर्व याचिकाकर्ता द्वारा प्रस्तुत पाटन की याचिका प्राप्त होने की सूचना दी ।

- iv. प्राधिकारी ने सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम की अनुसूची-1 के शीर्ष/उपशीर्ष 5501.30 एवं 5503.30 के अंतर्गत शामिल एक्रिलिक फाइबर के आयातों के संबंध में पाँटनरोधी कार्रवाई आरंभ करते हुए तारीख 1 जुलाई, 2003 को भारत के राजपत्र, असाधारण में एक सार्वजनिक सूचना प्रकाशित की।
- v. प्राधिकारी ने ज्ञात निर्यातकों, आयातकों और शिकायतकर्ताओं को उक्त सार्वजनिक सूचना की प्रति भेजी और उन्हें अपने विचार लिखित रूप में देने का अवसर प्रदान किया।
- vi. प्राधिकारी ने उपरोक्त नियम 6 के उप-नियम (3) के अनुसार याचिका की प्रति निम्नलिखित ज्ञात निर्यातकों तथा भारत में संबद्ध देश के दूतावास को भेजी -

1. जे एस सी " पॉलिमिर"
211440, नोवोपोलोत्स्क,
विटेब्सक रीजन,
बेलारूस गणराज्य
2. नोवोपोलिटैक्स एलआईसी
208 वेस्ट स्टेट स्ट्रीट
ट्रेंटन न्यू जर्सी, अमरीका
3. पुमिका ट्रेडिंग कारपोरेशन लि.,
तिषा स्ट्रीट
रिगा, लातविया

- vii. संबद्ध वस्तुओं के किए गए आयात के ब्यौरे का इंतजाम करने के लिए सेन्ट्रल बोर्ड ऑफ एक्साइज एण्ड कस्टम (सीबीईसी) और वाणिज्यिक आसूचना एवं सांख्यिकी महानिदेशालय (डीजीसीआईएण्डएस) से अनुरोध किया गया था।
- viii. संबद्ध देशों के दूतावास को नियम 6(2) के अनुसार जांच शुरुआत के संबंध में इस अनुरोध के साथ सूचित किया गया था कि वे अपने देश के निर्यातकों/उत्पादकों को निर्धारित समयावधि के भीतर प्रश्नावली का जवाब देने की सलाह दें। निर्यातकों को भेजे गए पत्र, याचिका और प्रश्नावली की एक प्रति भी उन्हें भेजी गई थी।
- ix. नियम 6(4) के अनुसार आवश्यक जानकारी हेतु निम्नलिखित ज्ञात आयातकों/भारत में संबद्ध वस्तुओं के प्रयोक्ता उद्योग एसोसिएशनों को एक प्रश्नावली भेजी गई थी :-

वर्धमान स्पनिंग एण्ड जैन, मिल्स लि.
चण्डीगढ़ रोड, लुधियाना- 141001
पंजाब

नाहर स्पनिंग मिल्स लि.,
373, इंडस्ट्रियल एरिया- ए,
लुधियाना- 141003
पंजाब

मालवा कॉटन स्पिनिंग मिल्स लि.,
इंडस्ट्रियल एरिया-ए,
लुधियाना- 141003
पंजाब

राजस्थान स्पिनिंग एण्ड विविंग मिल्स लि.,
भीलवाड़ा भवन,
40-41, कॉम सेन्टर
नई दिल्ली- 110065

विन्सोन टेक्सटाइल इंडस्ट्रीज लि.,
एससीओ 144-145, सेक्टर 34ए
चण्डीगढ़- 160022

सिद्धार्थ सुपर स्पिनिंग मिल्स लि.,
211, गगन दीप,
12, राजेन्द्रा प्लेस,
नई दिल्ली- 110008

भिवानी टेक्सटाइल मिल्स,
भिवानी
जिला- हिसार, हरियाणा

आदिनाथ टेक्सटाइल्स लि.,
गाँव- भोलापुर,
पी.ओ.- साहबाना, मुंडिया
लुधियाना (पंजाब)

श्रुति सिंथेटिक्स लि.,
गाँव- लोयारन, गागुण्डा रोड,
उदयपुर, राजस्थान

इंडियन स्पिनर्स एसोसिएशन
मार्फत दि मिलओनर्स एसोसिएशन,
एल्फिंस्टोन बिल्डिंग,
10, वीर नरिमन रोड,
फोर्ट, मुंबई- 400001

लुधियाना स्पिनर्स एसोसिएशन,
75, इंडस्ट्रियल एरिया- ए
लुधियाना- 141003

- X. प्राधिकारी ने सभी इच्छुक पार्टियों को अपने मत मौखिक रूप से 27 अप्रैल, 2004 को आयोजित सार्वजनिक सुनवाई में प्रस्तुत करने का अवसर दिया। मौखिक रूप से मत प्रस्तुत करने वाली सभी इच्छुक पार्टियों को मौखिक रूप से अभिव्यक्त मतों को लिखित में देने का अनुरोध किया गया था। पक्षकारों को विरोधी पार्टियों द्वारा अभिव्यक्त मतों की प्रतियां लेने और उसका खंडन, यदि कोई हो, प्रस्तुत करने की सलाह दी गई थी।
 - XI. प्राधिकारी ने नियम 6(7) के अनुसार विभिन्न हितबद्ध पक्षकारों द्वारा प्रस्तुत साक्ष्यों के अगोपनीय अंश वाली सार्वजनिक फाइल अनुरोध पर सभी हितबद्ध पक्षकारों को निरीक्षण हेतु उपलब्ध करायी।
 - XII. सार्वजनिक सुनवाई के पश्चात् जांच की शुरुआत करने के बाद हितबद्ध पक्षकारों द्वारा दिए गए तर्कों पर प्रकटन विवरण में उचित कार्रवाई की गयी है। प्रकटन विवरण के उत्तर में दिए गए तर्कों पर इन जांच परिणामों में विचार किया गया है।
 - XIII. उपरोक्त नियम- 16 के अनुसार, इन निष्कर्षों के लिए जिन आवश्यक तथ्यों/आधार पर विचार किया गया था उनका खुलासा 26 अक्टूबर, 2004 को ज्ञात हितबद्ध पक्षों को एक प्रकटन विवरण के जरिए कर दिया गया था और उस पर प्राप्त टिप्पणियों पर इन निष्कर्षों में विधिवत विचार किया गया है।
 - XIV. सामान्यतया स्वीकृत गणना सिद्धांतों (जीएएपी) तथा घरेलू उद्योग द्वारा प्रस्तुत सूचना के आधार पर इष्टतम उत्पादन लागत तथा भारत में संबद्ध वस्तु को बनाने तथा बिक्री की लागत की गणना हेतु घरेलू उद्योग का मौके पर सत्यापन (यथावश्यक) करने समेत लागत संबंधी जांच भी की गई थी।
 - XV. प्राधिकारी ने निर्यातक मैसर्स जेएससी पॉलिमिर नोवापोलोत्सक, बेलारूस द्वारा प्रस्तुत सूचना का मौके पर सत्यापन किया।
 - XVI. इस अधिसूचना में **** हितबद्ध पक्षकार द्वारा नियमों के तहत गोपनीय आधार पर प्रस्तुत सूचना तथा प्राधिकारी द्वारा उसी तरह समझी गई जानकारी प्रस्तुत है।
 - XVII. जांच में 1 अप्रैल, 2002 से 31 मार्च, 2003 तक की अवधि शामिल है। जांच विश्लेषण में तीन पूर्ववर्ती वर्ष 1999-2000, 2000-01, 2001-02 और जांच अवधि शामिल है।
 - XVIII. जांच शुरुआत संबंधी अधिसूचना की प्रतियां भी व्यापक परिचालन के लिए फिक्की सीआईआई, एसोचैम आदि को भेजी गई थीं।
- ख. याचिकाकर्ताओं, निर्यातकों, आयातकों और अन्य हितबद्ध पक्षकारों के विचार और प्राधिकारी द्वारा जांच।

3. अनेक हितबद्ध पक्षकारों द्वारा प्रस्तुत तथ्यों पर प्रकटन विवरण में विचार-विमर्श किया गया है। प्रकटन विवरण में पहले जिन तथ्यों पर विचार विमर्श नहीं किया गया है और प्रकटन विवरण के उत्तर में उठाया गया है उन पर संगत सीमा तक नियमानुसार संबंधित पैराग्राफ में विचार विमर्श किया गया है। हितबद्ध पक्षकारों द्वारा दिये गये तर्कों की जांच व उन पर विचार किया गया है और जहां कहीं उपयुक्त था, नीचे संगत पैराग्राफों में कार्रवाई की गयी है।
4. जांच शुरूआत के बाद निम्नलिखित से उत्तर प्राप्त हुए थे:

निर्यातक:

मै0 जेएससी पोलिमर नोवोपोलोत्स्क, बेलारूस:

आयातक

आयातकों की ओर से इंडियन स्पिनर्स एसोसिएशन (आईएसए) ने तर्क प्रस्तुत किये थे। तथापि, किसी भी आयातक ने प्रश्नावली का उत्तर प्रस्तुत नहीं किया। प्राधिकारी ने आई एस ए को यह सलाह दी थी कि वह आयातकों पर प्रश्नावली का उत्तर देने के लिए दबाव डालें। घरेलू उद्योग ने यह तर्क दिया है कि आई एस ए स्पिनरों के हित का प्रतिनिधित्व करने की स्थिति में नहीं है। प्राधिकारी ने स्पिनिंग उद्योग का प्रतिनिधित्व करने के लिए आई एस ए द्वारा किये गये दावे के बारे में घरेलू उद्योग द्वारा दिये गये तर्कों पर विचार किया। आई एस ए ने पोलिस्टिर स्टेपल फाइबर (पीएसएफ) और एक्रिलिक फाइबर से संबंधित पहले की जांच स्पिनरों का प्रतिनिधित्व किया है। प्राधिकारी ने इस जांच में आई एस ए द्वारा दिये तर्कों की जांच करना उचित समझा।

5. विचाराधीन उत्पाद:

इस जांच में विचाराधीन उत्पाद सभी डेनियर्स एक्रिलिक फाइबर है (जिसे एतदपश्चात सम्बद्ध वस्तु कहा गया है) एक्रिलिक फाइबर एक्रिलोनाइड्राइल इकाइयों का वजन के अनुसार न्यूनतम 90% से बना सिंथेटिक पोलिमर की लम्बी श्रृंखला है। एक्रिलिक फाइबर एक्रिलिक स्टेपल फाइबर, एक्रिलिक टो, एक्रिलिक टॉप हो सकता है।

याचिकाकर्ताओं ने यह दावा किया है कि एक्रिलिक फाइबर संबंधित 6 अंकीय वर्गीकरण 5501.30 और 550.30 के साथ सीमा शुल्क टैरिफ वर्गीकरण मुख्य शीर्ष 5501 और 5503 के अध्याय 55 के अन्तर्गत वर्गीकृत है। तथापि, यह सीमा शुल्क वर्गीकरण केवल सांकेतिक और वर्तमान जांच में किसी प्रकार बाध्यकारी नहीं है। आई एस ए द्वारा यह तर्क दिया गया है कि एक्रिलिक फाइबर और टो दो अलग-अलग मदें हैं जिन्हें आपस में मिलाया नहीं जा सकता। दो अलग-अलग सीमाशुल्क वर्गीकरण हैं जिनमें से एक टो के लिए और दूसरा फाइबर के लिए है। फाइबर को स्पिंडलों पर कच्ची सामग्री के रूप में प्रयोग किया जाता है जबकि टो को बुनाई के प्रयोजनार्थ प्रयोग किया जाता है जबकि टो को बुनाई के प्रयोजनार्थ प्रयोग किया जाता है। आई एस ए द्वारा यह तर्क भी दिया गया है कि प्राधिकारी द्वारा घरेलू उद्योग को आंकड़े एकत्र करने और बिना पक्षपात विचार करने के लिए उसे प्रस्तुत करने के लिए कहना चाहिए था। मै0 जे एस सी पालीमर निर्यातक द्वारा यह तर्क दिया गया है कि उन्होंने जांच अवधि के दौरान मोड एक्रिलिक फाइबर से अलग रखा जाना चाहिए। एक्रिलिक और मोड एक्रिलिक फाइबर सभी पहलुओं में समान वस्तुएं नहीं हैं तथा कोई भी विशेषता उनकी स्पष्ट समानता को सिद्ध नहीं करती है।

प्राधिकारी ने तीन दलीलों पर विचार किया है तथा उनका यह मानना है कि एक्रिलिक फाइबर तथा सन को समान विनिर्माण प्रक्रियाओं के द्वारा उत्पादित किया जाता है। सन, फाइबर की लंबी तथा निरंतर श्रृंखला है तथा स्टेपल फाइबर को उपभोक्ताओं की जरूरतों के अनुसार विभिन्न लम्बाइयों में काटा जाता है। घरेलू उत्पादक दोनों रूपों का उत्पादन करते हैं। एक्रिलिक फाइबर के उत्पादक अपनी सभी वार्षिक रिपोर्टों में उत्पाद का केवल एक्रिलिक फाइबर के रूप में उल्लेख करते हैं। इस मुद्दे पर माननीय सीईएसटीएटी ने भी जापान, स्पेन, पुर्तगाल तथा इटली से एक्रिलिक फाइबर के आयात के संदर्भ में निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा जारी किए गए अंतिम जांच परिणाम संबंधी मै0 ओसवाल वूलन मिल्स की अपील सं0 सी/73/99-एडी में निर्णय दिया था। प्राधिकारी मानते हैं कि विचाराधीन उत्पाद एक्रिलिक फाइबर है जो एक्रिलिक स्टेपल फाइबर एक्रिलिक सन अथवा एक्रिलिक टाप हो सकता है। मै0 जे एस सी पालीमर की मोड एक्रिलिक फाइबर संबंधी दलीलों के संबंध में प्राधिकारी ने पाया कि निर्यातक ने जांच अवधि के दौरान मोड एक्रिलिक फाइबर का न तो उत्पादन किया है न ही निर्यात किया है। घरेलू उद्योग ने भी जांच अवधि के लिए एक्रिलिक फाइबर का उत्पादन किया। यह तुलना केवल एक्रिलिक फाइबर के बीच की जा रही है तथा मोड एक्रिलिक फाइबर के लिए पृथक से गणना करने की कोई आवश्यकता नहीं थी।

6. समान वस्तुएं

याचिकाकर्ता ने दावा किया है कि उनके द्वारा विनिर्मित उत्पाद तथा आयातित उत्पाद के बीच कोई अंतर नहीं है। उन्होंने यह भी बताया कि घरेलू उत्पादक द्वारा भारत में विनिर्मित संबद्ध उत्पाद व्यावसायिक रूप से तथा तकनीकी रूप से आयातित उत्पाद का स्थानापन्न है। भारतीय उद्योग द्वारा उत्पादित तथा संबद्ध देश से आयातित एक्रिलिक फाइबर भौतिक तथा रासायनिक, विशेषताओं, विनिर्माण प्रक्रिया तथा प्रौद्योगिक फलन तथा उपयोग, उत्पाद विशिष्टीकरण तथा सीमाशुल्क वर्गीकरण जैसी विशेषताओं में तुलनीय है। प्राधिकारी ने समान वस्तु संबंधी मै० पालीमर की दलीलों की जांच की तथा यह पाया कि मै० पालीमर द्वारा निर्यातित उत्पाद एक्रिलिक फाइबर था तथा घरेलू उत्पादकों द्वारा विनिर्मित उत्पाद भी एक्रिलिक फाइबर था। आयातित उत्पाद, घरेलू रूप से उत्पादित एक्रिलिक फाइबर के समनुरूप है तथा इसलिए समान वस्तु माना गया है।

7. घरेलू उद्योग

याचिका एक्रिलिक फाइबर विनिर्माताओं के फोरम, नई दिल्ली द्वारा भागीदार कंपनियों अर्थात् मै० इंडियन एक्रिलिक्स लिमि० चंडीगढ़, मै० कंसोलिडेटेड फाइबर्स एंड केमिकल्स लिमि० कोलकाता, मै० पशुपति एक्रिलान लिमि० नई दिल्ली के जरिए दायर की गई थी। याचिकाकर्ताओं का एक्रिलिक फाइबर के कुल घरेलू उत्पादन में 50% से अधिक का हिस्सा है तथा याचिकाकर्ता ने उपर्युक्त नियमावली के नियम 5(3)(क) के अनुसार याचिका दायर करने की योग्यता को पूरा किया। दो अन्य घरेलू उत्पादकों अर्थात् मै० इंडियन पेट्रोकेमिकल्स तथा केमिकल्स लि० बड़ौदा तथा मै० वर्धमान एक्रिलिक्स लिमि० लुधियाना ने याचिका का समर्थन किया। मै० वर्धमान एक्रिलिक्स लि० ने भी लागत तथा क्षति संबंधी सूचना प्रस्तुत की। प्राधिकारी ने चार घरेलू उत्पादकों अर्थात् मै० इंडियन एक्रिलिक लि० चंडीगढ़, मै० कंसोलिडेटेड फाइबर्स एंड केमिकल्स लिमिटेड, कोलकाता, मै० पशुपति एक्रिलान लिमि०, नई दिल्ली तथा मै० वर्धमान एक्रिलिक्स लि० पर नियम 2 (ख) के अर्थ के भीतर घरेलू उद्योग का प्रतिनिधित्व करने के लिए विचार किया क्योंकि संबद्ध वस्तुओं का सामूहिक उत्पादन संबद्ध वस्तुओं के कुल घरेलू उत्पादन का प्रमुख हिस्सा बनाता है।

ग. सामान्य मूल्य, निर्यात कीमत तथा पाटन मार्जिन से संबंधित दावों की जांच

8. जांच प्रारंभ संबंधी सूचना की प्रतियां संबद्ध देश के दूतावास, निर्यातकों, आयातकों तथा घरेलू उद्योग को भेजी गई थी। जांच प्रारंभ संबंधी सूचना के प्रत्युत्तर में मै0 जेएससी पोलीमिर नोवोपोलोस्क, बेलारूस (पालीमिर) ने निर्यातक प्रश्नावली का जवाब प्रस्तुत किया था। उन्होंने बाजार अर्थव्यवस्था संबंधी व्यवहार (एमईटी) प्रश्नावली का भी प्रत्युत्तर दिया था। प्राधिकारी ने पालीमिर द्वारा उपलब्ध कराई गई सूचना की नोवोपोलोस्क, स्थित उनके संयंत्र एवं कार्यालय में मौके पर जाकर जांच की। पालीमिर द्वारा एक्रीलिक फाइबर के संबंध में उनके निर्यातों, घरेलू बिक्री, उत्पादन की लागत संबंधी उपलब्ध कराई गई सूचना का सत्यापन किया गया। उनके बाजार अर्थव्यवस्था संबंधी व्यवहार से संबंधित दावे की भी जांच तथा सत्यापन किया गया। सत्यापन दल ने तेल तथा रसायन के लिए मिंस्क स्थित बेलारूसियन स्टेट कंसर्न-बेल्नेफ्पितखिम, विदेश आर्थिक संबंध विभाग, बेलारूस सरकार के अधिकारियों से कंपनी को बाजार अर्थव्यवस्था संबंधी व्यवहार के संबंध में विचार विमर्श भी किया। सत्यापन रिपोर्ट की प्रति मै0 पोलीमिर तथा भारत में बेलारूस के दूतावास को भेजी गई थी। तथापि, उन पर कोई टिप्पणियाँ प्राप्त नहीं हुई थीं।

9. परिशिष्ट 1 में दर्शाई गई घरेलू बिक्रियाँ

कंपनी ने जांच अवधि अर्थात् अप्रैल 2002 से मार्च 2003 के दौरान घरेलू बाजार में एक्रीलिक फाइबर की *** मी.टन की बिक्री संबंधी सूचना दी थी। कंपनी ने संपन्न करारों को ध्यान में रखते हुए एक समान बिक्री कीमत पर घरेलू बाजार में बिक्री की थी। घरेलू बाजार में, कंपनी ने रंगे हुए तथा अनरंगे फाइबर बेचे। सत्यापन के दौरान इस बात की पुष्टि हुई थी कि परिशिष्ट 3ख में दी गई बिक्री कीमत संबंधी सूचना अनरंगे फाइबर के संबंध में थी। कंपनी ने भारत को अनरंगे फाइबर का निर्यात किया था। सत्यापन में यह देखा गया था कि कंपनी ने बेलारूसी रूबल (बीआरबी) में दर्शाई गई प्रचलित करार कीमत को विनिमय दर पर अमरीकी डालर में परिवर्तित कर दिया था। प्रयुक्त विनिमय दर बेलारूस गणतंत्र के राष्ट्रीय बैंक द्वारा निर्धारित दरों के अनुसार थी। घरेलू बिक्री, मात्रा तथा कीमत संबंधी सूचना उचित क्रम में थी। घरेलू बिक्री एफ सी ए नोवोपोलोस्क आधार पर अर्थात् कारखाना द्वार पर की गई थी।

परिवहन संबंधी सभी प्रभार व्यापारियों की जिम्मेदारी हैं। भुगतान 100% अग्रिम दिया गया था।

10. उत्पादन लागत और बाजार अर्थव्यवस्था व्यवहार

कम्पनी ने दावा किया था कि वह कीमत निर्धारण एवं लागत निर्माण को बाजार सिद्धान्तों के अनुसार कार्य करता है और यह कि एक्रिलिक फाइबर के उत्पादन लागत की गणना में प्रासंगिक रूप से इसके उत्पादन एवं बिक्रियों से जुड़ी हुई लागतें परिलक्षित होती हैं। कम्पनी ने यह भी दावा किया था कि कच्ची सामग्री और एक्रिलिक फाइबर के उत्पादन हेतु प्रयुक्त सामग्री की लागत बाजार मूल्य के अनुरूप है। इसके अलावा, बेलारूस गणराज्य के कानून (कीमत निर्धारण के बारे में) से यह प्रमाणित होता है कि बेलारूस गणराज्य में मुक्त कीमतें लागू हैं और सभी विधिक व्यक्तियों को किसी माल की कीमत का स्वतंत्र रूप से निर्धारण करने का अधिकार दिया जाता है अथवा क्रेता की सहमति से निर्धारित किया जाता है। कम्पनी के अनुसार आन्तरिक, यूरोपीय, एशियाई और भारतीय समेत सभी बिक्री बाजारों में एक्रिलिक फाइबर की बिक्रियाँ, उत्पादन की लागत जमा लाभ से कम कीमत पर नहीं की जाती हैं।

कम्पनी ने यह भी दावा किया था कि बाजार अर्थव्यवस्था का स्वरूप इस स्थिति की पुष्टि करता है कि बेलारूस के संविधान में सम्पत्ति (अनुच्छेद 44) के उल्लंघनीयता के सिद्धान्त निर्धारित हैं। इस संविधान के अनुसार यह निर्धारित है कि किसी मालिक से जबरन सम्पत्ति लेने की अनुमति नहीं है सिवाय उन मामलों के जिनमें किसी सम्पत्ति को उसकी लागत की विधिवत एवं पूर्ण क्षतिपूर्ति और न्यायालय की डिक्री के अनुसार विधि द्वारा शर्तों एवं आदेश के अनुपालन पर सार्वजनिक आवश्यकता के उद्देश्य से ली गयी हो।

जहां तक विनिमय दर का संबंध है, यह दावा किया गया है कि मुद्रा विनिमय दरों का निर्धारण बेलारूसियन करेंसी स्टॉक एक्सचेंज पर व्यापार के परिणामों के अनुसार बाजारी सिद्धान्तों द्वारा किया जाता है।

11. प्रकटन विवरण के उत्तर में मै0 पोलिमिर ने यह तर्क दिया है कि:

- (i) हाइड्रोकार्बन फीड स्टॉक की खरीद खुली निविदा आधार पर की जाती है और यह मांग और आपूर्ति की अनुमति के साथ बाजारी सिद्धान्तों से प्रभावित होती है।
- (ii) एक्रिलोनाइड्राइल (एसीएन) की कीमत का निर्धारण उत्पादन लागत के अनुसार किया जाता है।
- (iii) पोलिमिर द्वारा एसीएन की कीमत के निर्धारण की पद्धति युक्तिसंगत है और वह प्रौद्योगिकीय प्रक्रिया की विशिष्टताओं पर आधारित है और वह राज्य के प्रभाव द्वारा किसी भी तरह निर्धारित नहीं की जाती है।
- (iv) पोलिमिर के लिए उपयोगिता कीमतें विशेष नहीं हैं। कीमतों का निर्धारण टैरिफ के आधार पर किया जाता है जिसके अनुसार बेलारूस में उपयोगिताओं का आयात किया जाता है।
- (v) लेखाकरण की कार्रवाई लेखाकरण और रिपोर्टिंग के बारे में बेलारूस गणराज्य के विधान के अनुसार की जाती है जो बेलारूस गणराज्य के संविधान पर आधारित है।
- (vi) राज्य के प्रभाव को केवल विधायी स्तर पर सुनिश्चित किया जाता है और यह सभी विधिक सत्ताओं को प्रभावित करता है भले ही बेलारूस गणराज्य में पंजीकृत सत्ताओं के स्वामित्व का स्वरूप कुछ भी हो। राज्य के विधान का उद्देश्य खरीद एवं बिक्री की कुशलता बढ़ाना है ताकि लाभप्रदता बढ़ाई जा सके और उत्पादन लागत कम की जा सके।
- (vii) यह तथ्य कि राज्य कंपनी का मुख्य अंशधारक है, एक साक्ष्य नहीं हो सकता है कि जे एस सी पॉलिमिर बाजार सिद्धान्तों के आधार पर कार्य नहीं करते हैं।
- (viii) जेएससी पॉलिमिर ने आगे तर्क दिया है कि एमईटी प्रश्नावली के उत्तर में उनके द्वारा प्रस्तुत सूचना और प्रकटन के उत्तर में दिए गए तर्कों में यह इंकार किया गया है कि जे एस सी पॉलिमिर वह कंपनी नहीं है जो बाजार अर्थव्यवस्था के सिद्धान्तों द्वारा कार्य कर रही है।

- (ix) आगे यह तर्क दिया गया है कि एक्रिलिक फाइबर के लिए सामान्य मूल्य का परिकलन करने के लिए तीसरे देश में एक्रिलिक फाइबर के विनिर्माता पर एसीएन सहित एक्रिलिक फाइबर की लागत को ध्यान में रखना चाहिए और ऐसे विनिर्माता के पास एसीएन के उत्पादन के लिए क्षमता होनी चाहिए।

12. प्राधिकारी द्वारा जांच

प्रश्नावली के उत्तर में दिए गए एक्रिलिक फाइबर के उत्पादन की लागत का सत्यापन जांच अवधि से संबंधित कंपनी की मूल वित्तीय रिपोर्टों के संदर्भ के साथ की गई। मूल निविष्टि एक्रिलोनाइड्राइल (एसीएन) की लागत का सत्यापन खरीद रिकॉर्ड से किया गया था।

कंपनी के पास निट्रोन डी के लिए *** मी.टन/प्रति वर्ष, निट्रोन सी के लिए *** मी.टन/प्रति वर्ष और निट्रोन एम के लिए *** मी.टन/प्रति वर्ष की क्षमता है। ये एक्रिलिक फाइबर्स हैं और इन विवरणों से जाने जाते हैं। कंपनी पहले राज्य उद्यम थी और सितंबर, 2002 (जांच अवधि के दौरान) में एक संयुक्त स्टॉक कंपनी बन गई। तथापि, 99.9% शेयर राज्य के पास हैं। एक निरीक्षण परिषद कंपनी के प्रभारी को नियुक्त करती है और परिषद का प्रतिनिधित्व कंपनी के शेयर धारकों द्वारा किया जाता है। चूंकि 99.99% शेयर आर्थिक मंत्रालय, बेलारूस के पास है अतः प्रभारी को नियुक्त करने वाली निरीक्षण परिषद स्वतंत्र रूप से और बिना राज्य के हस्तक्षेप के कार्य करने वाली नहीं कही जा सकती।

प्राधिकारी ने प्रकटन विवरण के उत्तर में मै0 जे एस सी पॉलिमिर द्वारा दिए गए तर्क पर विचार किया है। जहां तक नाफ्ता की खरीद और ए सी एन के उत्पादन के लिए प्रबंध के बारे में डीजीएडी द्वारा की गई जांच के अनुसार यह साबित नहीं किया जा सका कि जैसाकि एक्रिलिक फाइबर के उत्पादन की लागत से प्रदर्शित ए सी एन की कीमत से आपूर्ति और मांग की स्थिति को प्रदर्शित करने वाले बाजारी संकेतों द्वारा निर्धारित कच्ची सामग्री की कीमत पूर्णरूपेण प्रदर्शित हो रही हो क्योंकि इसमें राज्य का पर्याप्त हस्तक्षेप मालूम हुआ था। जांच अवधि के दौरान एक्रिलिक फाइबर की काफी मात्रा की बिक्री के संबंध में वस्तु-विनिमय प्रबंध की मौजूदगी भी थी। वस्तु विनिमय की इस बिक्री की कंपनी द्वारा भी पुष्टि की गई थी। यह संकेत भी था कि कंपनी को

विद्युत की उपलब्धता विशेष कीमतों पर करवाई गई है। यह भी स्पष्टतया सिद्ध नहीं किया जा सका कि कंपनी ने जांच अवधि के दौरान सामान्यता स्वीकृत लेखा सिद्धान्तों (जीएएपी) का अनुसरण किया है। सूचना की जांच के दौरान यह नोट किया गया था कि कीमत के बारे में मई 10, 1999, एन 255-3 का बेलारूस गणराज्य का एक विधान है। अध्याय 3 कीमत नियंत्रण के बारे में है। इस अध्याय की धारा 7 के अनुसार बेलारूस के पण्य बाजार में शीर्ष स्थान वाली आर्थिक प्रबंधन के विषयों वाली वस्तुओं के संबंध में नियंत्रित कीमतों (टैरिफों) को लागू किया गया है तथा स्टेट रजिस्टर में शामिल किया गया है। जांच के दौरान यह पुष्टि की गई थी कि घरेलू बाजार में एक्रिलिक फाइबर की बिक्री कीमत संबंधी विधान के उपर्युक्त प्रावधान द्वारा शामिल है।

मै0 जे एस सी पॉलिमिर का मुख्य अंशधारक बेलारूस गणराज्य का आर्थिक मंत्रालय है जिसके पास शेयरों का 99.904% हिस्सा है। कंपनी के खुद के विवरण के अनुसार कीमतों, खर्चों, कच्चे माल सहित व्ययों, प्रौद्योगिकी और जनशक्ति की लागत की स्थापना में राज्य के प्रभाव को केवल मानक विधायी अधिनियमों के रूप में प्रयोग किया गया है, जो स्वामित्व फार्म से स्वतंत्र बेलारूस की सभी कंपनियों द्वारा कार्यान्वयन के लिए अनिवार्य है। एक्रिलिक फाइबर की घरेलू बाजार बिक्रियों से संबंधित कीमत के बारे में उपर्युक्त विधान की उपलब्धता और कंपनी के लगभग 100% राज्य स्वामित्व के मदेनजर प्राधिकारी कंपनी के इस दावे को स्वीकार करना कठिन पाते हैं कि वह मांग और आपूर्ति स्तरों, बाजार स्थिति, उत्पादन लागत को स्वयं ध्यान में रखकर कीमत और व्यय के बारे में निर्णय लेने के लिए स्वतंत्र है। जहां तक नाप्या की खरीद और एसीएन के उत्पादन के लिए प्रबंध का संबंध है, यह साबित नहीं किया जा सका जैसाकि एक्रिलिक फाइबर के उत्पादन की लागत से प्रदर्शित ए सी एन की कीमत से आपूर्ति और मांग की स्थिति को प्रदर्शित करने वाले बाजारी संकेतों द्वारा निर्धारित कच्ची सामग्री की कीमत पूर्ण रूपेण प्रदर्शित हो रही हो क्योंकि इसमें राज्य का पर्याप्त हस्तक्षेप मालूम हुआ था। प्राधिकारी मानते हैं कि बल्कि कच्ची सामग्री, प्रौद्योगिकी की लागत, निवेश सहित कीमतों, लागतों और निविष्टियों के संबंध में कंपनी के निर्णयों में पर्याप्त राज्य हस्तक्षेप की काफी संभावना और साक्ष्य हैं। अतः प्राधिकारी का मानना है कि उत्पादन की लागत, जोकि लेखा खातों में दर्शाई गई है, से उत्पादन की लागत पूरी तरह प्रदर्शित नहीं होती है।

जेएससी पॉलिमिर की गैर-बाजार अर्थव्यवस्था से एक कंपनी होने की परिकल्पना का पाटनरोधी नियमों के अनुबंध 1 के पैरा 8(3) की अपेक्षाओं के अनुसार प्रस्तुत सूचना और जांच के आधार पर पूरी तरह खंडन नहीं किया गया है। अतः जे एस सी पॉलिमिर को बाजार अर्थव्यवस्था व्यवहार नहीं प्रदान किया गया है। तदनुसार सामान्य मूल्य निर्धारण बेलारूस में एक्रिलिक फाइबर की घरेलू बिक्री कीमत पर आधारित नहीं हो सकता। अनुबंध-1 के पैरा 7 के अनुसार सामान्य मूल्य का निर्धारण एक उचित लाभ मार्जिन को शामिल करने के लिए यथा समायोजित समान उत्पाद के लिए भारत में वास्तव में दी गई अथवा दी जाने वाली कीमत के लिए परिकल्पित मूल्य के आधार पर किया जा सकता है। प्राधिकारी ने एसीएन के उत्पादन के लिए क्षमता वाले तीसरे देश में एक उत्पादक के बारे में एक्रिलिक फाइबर के सामान्य मूल्य के निर्धारण के बारे में मै0 पॉलिमिर के तर्क को स्वीकार करने योग्य नहीं माना है। पाटनरोधी नियमों के अनुबंध 1 के पैरा 7 के प्रावधानों के अनुसार गैर-बाजार अर्थव्यवस्था देश से आयातों के बारे में सामान्य मूल्य का निर्धारण एक उचित लाभ मार्जिन को शामिल करने के लिए, यदि आवश्यक हो समान उत्पाद के लिए भारत में वास्तव में दिए गए और देय कीमत के आधार पर किया जा सकता है। तदनुसार प्राधिकारी ने सामान्य मूल्य का निर्धारण समान उत्पादन के लिए भारत में वास्तव में दिए गए अथवा देय कीमत के आधार पर किया है इसके लिए प्रमुख कच्ची सामग्री एक्रिलोनाइट्रोइल की अन्तर्राष्ट्रीय कीमत पर भारत में आयातों के वास्तविक साक्ष्य को ध्यान में रखते हुए विचार किया गया है। सबसे अधिक प्रभावी घरेलू उत्पादक को ध्यान में रखते हुए परिवर्तन लागतों, बिक्री, सामान्य और प्रशासनिक खर्चों पर भी विचार किया गया है। *** अम.डालर प्रति मी.टन का सामान्य मूल्य निकालने के लिए एक उचित लाभ मार्जिन को जोड़ा गया है।

13. निर्यात कीमत:

कंपनी ने जांच अवधि के दौरान भारत को एक्रिलिक फाइबर के *** मी.टन के निर्यात किए हैं। ये बिक्रियाँ एफसीए नोवोपोलोत्स्क आधार पर तीन ग्राहकों को की गई थीं। भुगतान का तरीका *** था। कोई ऋण शामिल नहीं था। किसी एजेंट को कमीशन का कोई भुगतान नहीं किया गया था। अन्तर्राष्ट्रीय भाड़े, विदेशी परिवहन के कारण कोई समायोजन शामिल नहीं किया गया था क्योंकि डिलीवरी एफसीए नोवोपोलोत्स्क थी। प्राधिकारी पाते हैं कि बेलारूस

से निर्यात की मात्रा, जैसाकि पॉलिमिर के जवाब में दर्शाया गया है, डीजीसीआईएंडएस आंकड़ों के लगभग समान है। बेलारूस से एक्रिलिक फाइबर के किसी अन्य उत्पादक/निर्यातक के कोई साक्ष्य नहीं हैं। बेलारूस के लिए भारत आरत निर्यात कीमत *** अम.डालर निर्धारित की गई है।

14. पाटन मार्जिन

प्राधिकारी ने पाटनरोधी नियमों के अनुबंध 1 में यथानिर्धारित सामान्य मूल्य, निर्यात कीमत और पाटन के मार्जिन के निर्धारण को तय करने वाले सिद्धान्तों को अपनाने की सतत् पद्धति का अनुसरण किया है। पाटन मार्जिन का निर्धारण नियमों के अनुबंध-1 के पैरा 6 में निर्धारित सिद्धान्त के अनुसरण में सामान्य मूल्य के साथ निर्यात कीमत की उचित तुलना के आधार पर किया गया है। यह तुलना व्यापार के समान स्तर अर्थात् कारखाना-द्वार स्तर पर की गई है। कारखाना-द्वार स्तर पर सामान्य मूल्य की तुलना एक्रिलिक फाइबर के तुलनीय प्रकार के कारखाना-द्वार स्तर पर निर्यात कीमत के साथ की गई है। ऊपर यथा निर्धारित सामान्य मूल्य और निर्यात कीमत के आधार पर प्राधिकारी बेलारूस (%) के लिए निम्नलिखित पाटन मार्जिन पाते हैं:-

सामान्य मूल्य	\$***
निर्यात कीमत	\$***
पाटन मार्जिन	\$***
पाटन मार्जिन %	49.14%

घ. घरेलू उद्योग की क्षति

15. पाटनरोधी नियमावली के नियम 11 में निम्नानुसार व्यवस्था है:-

"क्षति का निर्धारण:

- (1) निर्दिष्ट देशों से हुए आयातों के मामले में निर्दिष्ट प्राधिकारी आगे अपने निष्कर्ष दर्ज करेंगे कि भारत में होने वाले ऐसे आयातों से भारत में स्थापित किसी

उद्योग को वास्तविक क्षति होती अथवा क्षति का खतरा उत्पन्न होता है अथवा किसी उद्योग को स्थापित करने में बाधा आती है;

- (2) निर्दिष्ट प्राधिकारी घरेलू उद्योग को होने वाली क्षति, घरेलू उद्योग को होने वाली क्षति के खतरे और घरेलू उद्योग की स्थापना में आने वाली वास्तविक बाधा और पाटित आयातों की मात्रा, और समान वस्तुओं के लिए घरेलू बाजार में कीमतों पर इसके प्रभाव और ऐसी वस्तुओं के घरेलू उत्पादकों पर ऐसे आयातों के परिणामी प्रभाव समेत सभी संगत तथ्यों को ध्यान में रखते हुए इन नियमों के अनुबंध II में निर्धारित सिद्धांतों के अनुसार पाटित आयातों और क्षति के बीच कारणात्मक संबंध का मूल्यांकन करेंगे।

16. क्षति के निर्धारण के लिए सिद्धान्त पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध II में दिए गए हैं जिसके अनुसार:

क. क्षति के निर्धारण में (क) पाटित आयातों की मात्रा तथा समान वस्तु के लिए घरेलू बाजार में कीमतों पर पाटित आयातों के प्रभाव तथा (ख) ऐसे उत्पादों के घरेलू उत्पादकों पर इन आयातों के परिणामी प्रभाव दोनों की वस्तुपरक जांच शामिल होगी।

ख. पाटित आयातों के मात्रा की जांच करते समय उक्त प्राधिकारी इस बात पर विचार करेंगे कि क्या पाटित आयातों में समग्र रूप से अथवा भारत में उत्पादन अथवा खपत की तुलना में काफी वृद्धि हुई है। नियम 18 के उप नियम (2) में यथा उल्लिखित कीमतों पर पाटित आयातों के प्रभाव के संबंध में निर्दिष्ट प्राधिकारी इस बात पर विचार करेंगे कि क्या भारत में समान उत्पाद की कीमत की तुलना में पाटित आयातों द्वारा अत्यधिक कीमत कटौती हुई है अथवा क्या ऐसे आयातों का प्रभाव अन्यथा काफी हद तक कीमतों में कमी लाना अथवा उस कीमत वृद्धि को रोकना है जोकि अन्यथा काफी हद तक बढ़ गई होती।

17. घरेलू उद्योग द्वारा उठाए गए मुद्दे:

घरेलू उद्योग ने सभी क्षति संबंधी मापदण्डों और उत्पादन की लागत संबंधी सूचना प्रस्तुत की है। घरेलू उद्योग द्वारा यह दावा किया गया है कि इसे सम्बद्ध देश सहित उन विभिन्न देशों से इस अवधि में पाटन के कारण क्षति हुई है, जिनके विरुद्ध जांच या तो चल रही है अथवा पाटनरोधी शुल्क लागू है।

विश्व भर में उत्पाद की बेशी अप्रयुक्त क्षमता के परिणामस्वरूप उत्पाद का निर्यात प्रचलित सामान्य मूल्य से कम पर हो रहा है। इसके परिणामस्वरूप लगातार पाटन हो रहा है और घरेलू उद्योग को लगातार क्षति हो रही है। घरेलू उद्योग की क्षति को मौजूदा शुल्कों और अन्य देशों के विरुद्ध चल रही जांच के मद्देनजर देखे जाने की आवश्यकता है। घरेलू उद्योग द्वारा आगे यह भी तर्क दिया गया है कि इंडियन स्पिनर्स एसोसिएशन (आईएसए) के पास स्पिनर्स के हितों का प्रतिनिधित्व करने का अधिकार नहीं है। इसके अतिरिक्त उन्हें नियम 2(ग) के अर्थों के भीतर हितबद्ध पक्ष के रूप में नहीं माना जा सकता है।

18. आईएसए द्वारा उठाए गए मुद्दे:

- (i) आई एस ए उपभोक्ताओं का एक प्रतिनिधिक निकाय है। इस संबंध में कुछेक स्पिनिंग मिल्स के पत्र प्रस्तुत किए गए हैं।
- (ii) फिलामेंट टो और एक्रिलिक फाइबर के लिए अलग गणना करने की आवश्यकता है।
- (iii) घरेलू उद्योग बेलारूस को गैर-बाजार अर्थव्यवस्था के रूप में स्थापित करने में असफल रहा है।
- (iv) यद्यपि व्यावहारिक रूप से विश्व के सभी एक्रिलिक फाइबर उत्पादक देशों से एक्रिलिक फाइबर के आयातों पर पिछले कुछ समय से पाटनरोधी शुल्क लागू हैं, तथापि घरेलू उद्योग अब भी ये आरोप लगा रहा है कि उन्हें आयातों से क्षति होना जारी है। इसका अर्थ केवल यही है कि घरेलू उद्योग को होने वाली कथित क्षति आयातों के कारण नहीं है बल्कि किनहीं अन्य कारणों, अर्थात् हमारे देश में अपनायी गई मल्टी-फाइबर नीति के कारण है।
- (v) घरेलू उद्योग की कुछ इकाइयों द्वारा अप्रचलित प्रौद्योगिकी के प्रयोग के कारण कुछ मामलों में उत्पादन लागत असामान्य रूप से अधिक थी और वास्तविक कीमत संरचना से मेल नहीं खाती थी। अवास्तविक रूप से उत्पादन लागत के लिए उच्च बेंचमार्क और इसके साथ ही विश्व में सभी देशों से व्यावहारिक रूप से पाटनरोधी शुल्क लागू होने से घरेलू उद्योग को संबद्ध वस्तु की कीमतों को कृत्रिम रूप से उच्च स्तर पर बनाए रखने में मदद मिली है।

- (vi) घरेलू उद्योग द्वारा कसूल की गई उच्च कीमतों पर एक्रिलिक फाइबर वाले यार्न या फेब्रिक्स या वस्त्रों जैसे मूल्यवर्धित मर्चों के निर्यात करना संभव नहीं है। इस प्रकार मूल्यवर्धित मर्चों के विनिर्माताओं द्वारा विकसित निर्यात बाजारों के लिए एक्रिलिक फाइबर के प्रयोक्ता अग्रिम लाइसेंसिंग प्रणाली के अंतर्गत एक्रिलिक फाइबर का आयात कर रहे हैं।
- (vii) आयातों में वृद्धि का एक अन्य कारण यह है कि भारत से एक्रिलिक फाइबर के निर्यात में अचानक उछाल आया है। निर्यातों में 2001-02 में 321 टन से 5176 टन की वृद्धि हुई है। इससे घरेलू उद्योग से गुणवत्तायुक्त फाइबर की उपलब्धता में भारी कमी हुई है।
- (viii) बिक्रियों में कमी होना वैध तर्क नहीं है क्योंकि निर्यात बिक्रियों समेत कुल बिक्रियों पर विचार करना चाहिए।
- (ix) जहाँ तक बिक्री कीमत का संबंध है, घरेलू उद्योग ने यह स्वीकार किया है कि बिक्री कीमतों में वृद्धि हुई है। उन्होंने यह दलील भी दी है कि बिक्री कीमत में वृद्धि उत्पादन लागत में हुई वृद्धि के कारण हुई है। इसका स्पष्ट अर्थ यह है कि कीमतों में उत्पादन लागत में हुई वृद्धि की तुलना में काफी अधिक वृद्धि की गई है और इन बढ़ी हुई कीमतों से अब पूर्ववर्ती वर्षों में उद्योग द्वारा उठाये गए घाटों की प्रतिपूर्ति होगी।
- (x) कीमत ह्रास/मंदी संबंधी घरेलू उद्योग के तर्क निराधार हैं और असंगत हैं।
- (xi) जहाँ तक लाभप्रदता का संबंध है, यदि बिक्री कीमतों में उत्पादन लागत में वृद्धि और पूर्ववर्ती घाटों की प्रतिपूर्ति कर दी है जैसाकि घरेलू उद्योग द्वारा तर्क दिया गया है, तो इस संबंध में कोई प्रतिकूल बिन्दु नहीं है।
- (xii) उत्पादकता में सुधार हुआ है और इस प्रकार कोई क्षति नहीं हुई है।
- (xiii) एक्रिलिक फाइबर ऊन का स्थानापन्न है और एक्रिलिक फाइबर से बने वस्त्रों का प्रयोग गरीब तबके के लोगों द्वारा सदियों के वस्त्र के रूप में होता है। घरेलू उद्योग को कोई क्षति नहीं हुई है।

प्रकटन विवरण के उत्तर में, आईएसए ने विभिन्न क्षति के मापदंडों के संबंध में टिप्पणियां की है। आईएसए के अनुसार प्राधिकारी ने यह पाया है कि उत्पादन क्षमता उपयोग और उत्पादकता जैसे कारकों में सुधार हुआ है। पाटित आयातों की मात्रा के बारे में निकाला गया निष्कर्ष गलत है क्योंकि मोड एक्रिलिक्स के आयातों में कोई कमी नहीं हुई है। अधिकांशतः आयात अग्रिम साइसेसों के अधीन किए गए हैं और एक्रिलिक फाइबर के बड़े हुए निर्यातों के प्रभाव पर भी विचार नहीं किया गया है। आईएसए के विचारों में एक्रिलिक फाइबर के आयातों पर पाटनरोधी शुल्क लागू करने का मामला नहीं बनता है।

19. प्राधिकारी द्वारा जांच:

प्राधिकारी ने कताई उद्योग के हितों के प्रतिनिधित्व हेतु आईएसए के बाबे के बारे में घरेलू उद्योग द्वारा दिए गए तर्कों पर विचार किया है। आईएसए ने पालिएस्टर स्टेपल फाइबर (पीएसएफ) और एक्रिलिक फाइबर के आयातों से संबंधित पूर्ववर्ती जांच में बुनकरों का प्रतिनिधित्व किया था। आईएसए के किसी भी सदस्य अर्थात् एक्रिलिक फाइबर के आयातकों एवं प्रयोक्ताओं ने इस जांच में प्रश्नावली का उत्तर नहीं दिया है, यद्यपि कुछेक आयातकों ने अपने हितों का प्रतिनिधित्व करने के लिए आईएसए को प्राधिकृत किया है। आयातकों के लिए यह उचित होता कि वे प्राधिकारी का सहयोग करने के लिए प्रश्नावली के उत्तर में सूचना देते। तथापि प्राधिकारी ने इस जांच में आई एस ए द्वारा दिए गए तर्कों की जांच करना उचित समझा है। आईएसए द्वारा दिए गए तर्कों पर संगत क्षति संबंधी मापदंडों के अधीन उचित ढंग से विचार किया गया है। घरेलू उद्योग द्वारा प्रस्तुत सूचना का विश्लेषण एवं मूल्यांकन तथा सत्यापन करने के बाद प्राधिकारी को निम्नलिखित क्षति संबंधी सूचना मिली है।

20. आयातों की मात्रा:

डीजीसीआईएस के प्रकाशित आंकड़ों के अनुसार आयातों की मात्रा निम्नानुसार है:

आयात	इकाई	1999-00	2000-01	2000-02	2002-03
बेलारूस	मी.टन	0	171	40	1839
अन्य देश	मी.टन	14258	13797	9629	19254

कुल आयात	मी. टन	14258	13967	9669	21093
----------	--------	-------	-------	------	-------

वर्ष 1999-2000 के दौरान बेलारूस से आयात शून्य थे और 2000-01 में ये 171 मी.टन थे। इनमें जांच अवधि के दौरान 1839 मी.टन की वृद्धि हुई थी। संबद्ध देशों से आयातों में 2000-01 में 1.22% से जांच अवधि के दौरान कुल आयातों के हिस्से के रूप में 8.72% की वृद्धि हुई थी। अतः संबद्ध देश से संबद्ध वस्तु के आयातों में समग्र रूप से वृद्धि हुई थी।

आईएसए के इन तर्कों के संबंध में कि आयात आंकड़ों की मात्रा पर विश्वास नहीं किया जा सकता है क्योंकि इसमें मोड एक्रिलिक के आयात शामिल हैं; प्राधिकारी ने यह पाया है कि मोड एक्रिलिक फाइबर के लगभग 1200 मी.टन के आयात मुख्यतः जापान से किए गए थे। संबद्ध देश अर्थात् बेलारूस से आयात एक्रिलिक फाइबर के थे। कुल आयातों से मोड एक्रिलिक फाइबर को बाहर रखे जाने के परिणामस्वरूप बेलारूस से आयातों का प्रतिशत उच्च हो जाएगा क्योंकि एक्रिलिक फाइबर का कुल आयात घटा जाएगा। अतः कुल आयातों में मोड एक्रिलिक फाइबर को शामिल करने से विश्लेषण के परिणाम विकृत नहीं हुए हैं। जहाँ तक इस तर्क का संबंध है कि अधिकांश आयात अग्रिम लाइसेंस के तहत किए गए हैं, प्राधिकारी ने यह पाया है कि ऐसे आयात, जब तक ये समान वस्तु हैं, को आयातों के मात्रात्मक प्रभाव के क्षति संबंधी विश्लेषण के लिए जांच का एक भाग माना जाना है।

21. बाजार हिस्सा:

प्राधिकारी ने यह पाया है कि घरेलू उद्योग और संबद्ध वस्तु की मांग में संबद्ध देश के आयातों के बाजार हिस्से निम्नानुसार हैं-

मांग	इकाई	1999-00	2000-01	2001-02	2002-03
घरेलू उद्योग की बिक्रियाँ	मी.टन	83000	75233	86053	74080
आईपीसीएल की बिक्रियाँ	मी.टन	16346	15084	17866	18981
आयात	मी.टन	14258	13967	9669	21093

मांग	मी. टन	113604	104285	113587	114154
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100.00	91.80	99.99	100.48
मांग में बाजार हिस्सा					
घरेलू उद्योग	%	73.06	72.14	75.76	64.89
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100.00	98.74	103.69	88.81
आईपीसीएल	%	14.39	14.46	15.73	16.62
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100.00	100.53	109.32	115.49
अन्य देश	%	12.55	13.23	8.48	16.88
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100.00	105.41	67.86	136.25
संबद्ध देश	%	0.00	0.16	0.04	1.61
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	0.00	100.00	21.52	981.18

प्राधिकारी ने यह पाया है कि संबद्ध देश से संबद्ध वस्तुओं के आयातों के हिस्से में 2000-2001 के दौरान 0.16% से जांच अवधि के दौरान 1.61% तक की वृद्धि हुई है। इस प्रकार देश में उत्पाद की मांग की दृष्टि से संबद्ध देश से पाटित आयातों में वृद्धि हुई है। तथापि मांग में संबद्ध देश का हिस्सा काफी कम है। तथापि कुल मांग में घरेलू उद्योग के हिस्से में 1999-2000 में 73.06% से जांच अवधि के दौरान 64.89% तक की कमी हुई है। आईएसए ने यह तर्क दिया है कि यदि घरेलू उत्पादन आयातों से अधिक बढ़ गया है तो घरेलू उत्पादक का बाजार हिस्सा बढ़ा होता। प्राधिकारी ने इस तर्क को युक्तिसंगत नहीं माना क्योंकि मांग की गणना घरेलू उद्योग की बिक्रियों और कुल आयातों को ध्यान में रखते हुए किया गया है। प्राधिकारी ने पाया कि मांग और बाजार हिस्से की गणना के लिए अपनायी गई पद्धति और विश्लेषक के अनुसार मांग में घरेलू उद्योग के हिस्से में गिरावट आई है जबकि संबद्ध देशों से आयातों के हिस्से में वृद्धि हुई है।

22. उत्पादन एवं क्षमता उपयोग:

घरेलू उद्योग का उत्पादन एवं क्षमता उपयोग निम्नानुसार रहा है:

	इकाई	1999-00	2000-01	2001-02	2002-03
क्षमता	मी. टन	89500	89500	89500	89500
उत्पादन	मी. टन	81592	77462	81754	82742

क्षमता उपयोग	%	91.16	86.55	91.34	92.45
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100.00	94.94	100.20	101.41

प्राधिकारी ने पाया है कि पूर्ववर्ती वर्षों की तुलना में जांच अवधि के दौरान घरेलू उद्योग के क्षमता उपयोग में सुधार हुआ है।

23. बिक्री मात्रा:

घरेलू उद्योग की बिक्री मात्राएं 1999-2000 के 83000 मी.टन से घटकर जांच अवधि में 74080 मी.टन रह गई है और निम्नानुसार है:-

1999-00	2000-01	2001-02	2002-03
83000	75233	86053	74080
100	90.64	103.68	89.25

प्राधिकारी ने यह पाया कि वर्ष 1999-2000 की तुलना में जांच अवधि के दौरान घरेलू उद्योग की बिक्री मात्राओं में कमी आई है। आईएसए द्वारा यह तर्क दिया गया है कि बिक्री मात्राओं में घरेलू और निर्यात बिक्रियाँ शामिल होनी चाहिए। प्राधिकारी का यह विचार है कि पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध 11 के उप-पैरा (iv) के अनुसार क्षति की जांच, बिक्री में गिरावट से संबंधित आर्थिक कारकों को घरेलू बिक्रियों के संदर्भ में देखा जाना है क्योंकि घरेलू उद्योग पर पाटित आयातों के प्रभाव का परीक्षण करना संगत होगा। घरेलू उद्योग के निर्यात निष्पादन की जांच नियमावली के अनुबंध 11 के उप-पैरा (v) के अंतर्गत पाटित आयातों के कारणात्मक संबंध के रूप में की जानी है। तदनुसार, प्राधिकारी मानते हैं कि घरेलू उद्योग की घरेलू बिक्री मात्राओं के विश्लेषण हेतु अपनायी गई पद्धति उचित है।

24. भंडार सूची:

समाप्त हुए स्टॉक की भण्डार सूची और स्टॉक की दैनिक बिक्री की संख्या के रूप में भण्डार सूची निम्नानुसार है:-

इकाई	1999-2000	2000-01	2001-2002	2002-2003
मी. टन	3660	5744	1020	5061
सूचीबद्ध	100	156.94	27.86	138.28
स्टॉक में बिक्री के लिए दिनों की संख्या	16.09	27.87	4.32	24.93
सूचीबद्ध	100	173.21	26.85	154.94

प्राधिकारी पाते हैं कि वर्ष 1999-2000 की तुलना में जांच अवधि के अंत तक घरेलू उद्योग के तैयार माल की भंडार सूची में काफी वृद्धि हुई है। स्टॉक में बिक्री के लिए दिनों की संख्या के संदर्भ में भी भंडार-सूची में वृद्धि हुई थी जैसाकि आधार वर्ष में 100 की तुलना में जांच की अवधि में 154.94 के सूचीबद्ध आंकड़ों में देखा जा सकता है।

25. कीमत कटौती:

जांच अवधि के दौरान पाटित आयातों के कारण हुई कीमत कटौती निम्नानुसार थी:-

औसत एनएसआर	***
पहुंच मूल्य	66672
कीमत कटौती	***
% कीमत कटौती	*** %
कीमत कटौती का रेंज	6-15%

आई एस ए ने तर्क दिए हैं कि फिलामेंट टो एवं एक्रिलिक फाइबर के लिए अलग अलग गणना किए जाने की आवश्यकता है। सत्यापन के दौरान, प्राधिकारी ने एक्रिलिक फाइबर अथवा टो की बिक्री कीमतों में कोई वास्तविक अन्तर नहीं पाया है जिसके आधार पर पृथक तुलना की आवश्यकता हो। घरेलू उद्योग के कुल एक्रिलिक फाइबर की भारित औसत निवल बिक्री प्राप्ति की तुलना करने पर, कीमत कटौती काफी अधिक पाई गई। आई एस ए द्वारा यह

भी तर्क दिया गया है कि आयातों के पहुंच मूल्य की तुलना घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत के साथ उपभोक्ताओं के मिल गेट पर की जानी है। प्राधिकारी ने उत्पादशुल्क, छूटों, भाड़ा तथा बिक्रीकर को छोड़कर घरेलू उद्योग की निवल बिक्री प्राप्ति की तुलना पत्तन पर आयातों के पहुंच मूल्य से की है। तथापि, तुलना समान स्तर पर रही है तथा उसके कारण किसी प्रकार की विकृति उत्पन्न नहीं हुई है।

26 कीमत ह्रास

प्राधिकारी ने पाया है कि पाटित आयातों के परिणामस्वरूप हुआ कीमत ह्रास निम्नानुसार है:-

पहुंच मूल्य	66672
क्षति रहित कीमत	***
कीमत ह्रास	***
%कीमत ह्रास	***0%
कीमत ह्रास की रेंज	15-25%

प्राधिकारी ने पाया है कि पाटित आयातों के परिणामस्वरूप हुआ कीमत ह्रास काफी अधिक है। आई एस ए ने तर्क दिया है कि पत्तन से लेकर उपभोक्ताओं, हैंडलिंग प्रभारों, बिक्री कर, चुंगीकर तक के परिवहन विस्तार को क्षति रहित कीमत के साथ तुलना करते समय पहुंच मूल्य के साथ जोड़ा जाना चाहिए। प्राधिकारी का मानना है कि कारखाना द्वार स्तर पर क्षति रहित कीमत के परिकलन तथा पहुंच मूल्य के साथ उसकी तुलना करने से किसी प्रकार के विकृतिकारी विश्लेषण की संभावना नहीं है। प्राधिकारी आई एस ए के इस तर्क में भी कोई सार नहीं पाते हैं कि घरेलू उद्योग की निर्यात कीमत को क्षति-रहित कीमत माना जाना चाहिए। घरेलू उद्योग की निर्यात कीमत को क्षतिरहित कीमत के रूप में मानने संबंधी इस दलील में कोई तर्कसंगतता नहीं है क्योंकि निर्यात कीमत, ड्राँ बैक की वापसी, कोई अन्य कर वापसी, किसी बाजार विशेष में प्रवेश करने हेतु किसी कार्य नीति के तहत कीमत निर्धारण संबंधी निर्णयों जैसे कई कारकों पर निर्भर हो सकती है।

27. घरेलू कीमतों पर प्रभाव डालने वाले कारक:

प्राधिकारी नोट करते हैं कि घरेलू उद्योग की बिक्री कीमतें, अलग अलग देशों से संबद्ध वस्तुओं की कच्ची सामग्री की लागत एवं आयातों की कीमत से जुड़ी हुई हैं। क्षति विश्लेषण की अवधि के दौरान प्रमुख कच्ची सामग्री एक्रायलोनाइट्राइल की कीमत में उतार-चढ़ाव आया। घरेलू उद्योग ने अपनी उत्पादकता में वृद्धि की है, तथापि एक्रिलिक फाइबर की बिक्री कीमत, पाटित आयातों के कारण दबाव में थी। संबद्ध देशों से पाटित आयातों के कारण घरेलू उद्योग की कीमतों में काफी कटौती हुई है। पाटित आयातों के कारण घरेलू उद्योग की कीमतों पर भी ह्रासकारी प्रभाव पड़ा था। घरेलू उद्योग को कम कीमत वाले आयातों का सामना करने के लिए अपनी कीमतों में कटौती करके अपने बाजार हिस्से को सुरक्षित रखने के लिए बाध्य होना पड़ा था। बेलारूस से निर्यात कीमत तथा घरेलू उद्योग की बिक्री प्राप्ति निम्नानुसार है:-

	2000-01	2001-2002	जांच की अवधि
बेलारूस निर्यात कीमत	57930	63430	55010
सूचीबद्ध	100	109.49	94.95
घरेलू उद्योग की बिक्री प्राप्ति	***	***	***
सूचीबद्ध	100	83.76	92.32

आईएसए ने तर्क दिया है कि घरेलू उद्योग की अकार्यकुशलता, प्रतिस्पर्धी फाइबरों की कीमतें अथवा संयंत्र का अलाभकारी आकार घरेलू कीमतों पर प्रभाव डालने वाले कारक हो सकते हैं। प्राधिकारी पाते हैं कि जांच की अवधि में घरेलू उद्योग के क्षमता उपयोग तथा उत्पादकता में सुधार आया और इसलिए इन्हें क्षति हेतु आधार नहीं माना जा सकता। संबद्ध वस्तुओं की मांग में कमी नहीं आई है इसलिए प्रतिस्पर्धी फाइबरों की कीमतों को घरेलू कीमतों पर प्रभाव डालने वाला कारक नहीं ठहराया जा सकता। जहां तक संयंत्र के अलाभकारी आकार का संबंध है, इसे भारतीय संदर्भ में देखा जाना चाहिए। संयंत्र के लाभकारी आकार के आधार पर किसी विदेशी उत्पादक की अनुमानित

कार्यकुशलता, उस देश के सामान्य मूल्य विश्लेषण में प्रतिबिम्बित होती है। इसके अतिरिक्त, तुलनात्मक लागत लाभों संबंधी कोई आंकड़े उपलब्ध नहीं कराए गए थे, जिन पर घरेलू उद्योग द्वारा टिप्पणी की जा सके। जहां तक जांच किए जा रहे निर्यातक का प्रश्न है, प्राधिकारी ने रिकॉर्डों का परीक्षण किया है तथा निर्यातक की उत्पादन लागत के आधार पर भी (यद्यपि एनएमई के आधार पर स्वीकृत नहीं) निर्यात पाटित कीमतों पर ही किए गए थे।

28. पाटन मार्जिन की मात्रा:

प्राधिकारी पाते हैं कि संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तुओं के पाटन मार्जिन की मात्रा 49.14% थी, जो कि अत्यधिक है।

29. रोजगार:

घरेलू उद्योग का रोजगार स्तर निम्नानुसार है (सूचीबद्ध)-

1999-2000	2000-01	2001-2002	2002-2003
100	99	95	91

प्राधिकारी पाते हैं कि घरेलू उद्योग के उत्पादन में वृद्धि के बावजूद, घरेलू उद्योग के रोजगार स्तर में गिरावट आई है। घरेलू उद्योग द्वारा लागतों में कमी करने की कोशिशों को इसका कारण माना जा सकता है।

30. वेतन:

घरेलू उद्योग द्वारा दिया जा रहा वेतन निम्नानुसार है:

	1999-2000	2000-01	2001-2002	2002-2003
वेतन लाख रु०	1906.68	2107.68	2139.75	2191.21
सूचीबद्ध	100	110.54	112.22	114.92

31. लाभप्रदता:

एक्रिलिक फाइबर की बिक्री में घरेलू उद्योग की लाभप्रदता निम्नानुसार पाई गई है:-

वर्ष	निवल बिक्री प्राप्ति (रु०/मी.टन)	उत्पादन की लागत (रु०/मी.टन)	लाभ/हानि प्रति मी.टन	सूचीबद्ध
1999-2000	***	***	***	100
2000-2001	***	***	***	(-)12000
2001-2002	***	***	***	(-)10371
2002-2003	***	***	***	(-)2066

प्राधिकारी पाते हैं कि जांच अवधि के दौरान संबद्ध वस्तु की प्रति इकाई बिक्री पर घरेलू उद्योग को प्रत्यक्ष घाटा हुआ है। यद्यपि पूर्ववर्ती दो वर्षों की तुलना में जांच अवधि के दौरान संबद्ध वस्तुओं की बिक्री पर प्रति इकाई घाटे में कमी हुई है, तथापि घरेलू उद्योग ने बिक्री में घाटा उठाया है।

घरेलू उद्योग के लिए लगाई गई पूंजी (कुल अचल संपत्तियाँ) की लाभप्रदता निम्नानुसार है:-

	1999-2000	2000-01	2001-2002	2002 -2003
सूचीबद्ध	100	(-)11857	(-)11142	(-)2542

पाया गया है कि घरेलू उद्योग को कुल अचल संपत्ति पर वित्तीय घाटे हो रहे हैं। आईएसए ने तर्क दिया है कि घरेलू उद्योग की लाभप्रदता दोनों उत्पादकों द्वारा इस्तेमाल की गई प्रौद्योगिकी एवं अलाभकारी संयंत्र आकार के कारण है। प्राधिकारी पाते हैं कि ये तर्क मान्य नहीं हैं जैसाकि पूर्ववर्ती विश्लेषण में विचार-

विमर्श किया गया है। घरेलू उद्योग की लाभप्रदता बिक्री प्राप्ति से संबंधित है, जो पाटित आयातों से प्रभावित होती है।

32. गंवाई गई संविदाओं के साक्ष्य

ऑर्डर गंवाने के संबंध में कोई विशिष्ट साक्ष्य नहीं मिले हैं। तथापि, घरेलू उपयोक्ता उद्योग द्वारा संबद्ध देश से एक्रिलिक फाइबर मंगवाए जाने से यह स्पष्ट होता है कि घरेलू उद्योग ने संबद्ध देश से पाटित आयातों के कारण कुछ ऑर्डर गंवाए हैं।

33. नकद प्रवाह पर वास्तविक एवं संभावित नकारात्मक प्रभाव:

प्राधिकारी पाते हैं कि वर्ष 1999-2000 की तुलना में जांच अवधि के दौरान घरेलू उद्योग की नकद प्रवाह स्थिति में गिरावट प्रदर्शित हुई थी, तथापि पूर्ववर्ती वर्ष 2001-02 के दौरान नकद प्रवाह स्थिति में सुधार आया है। घरेलू उद्योग को वित्तीय घाटा हुआ है, जिससे घरेलू उद्योग की नकद प्रवाह स्थिति को क्षति पहुंची है। आई एस ए ने तर्क दिया है कि मै0 वर्धमान एक्रिलिक्स लि0 अपनी पूंजी पुनर्संरचना एवं कार्यकुशल प्रबंधन उपायों के कारण लाभ कमा पाया है। प्राधिकारी का मानना है कि घरेलू उद्योग के निष्पादन का समग्र रूप से विश्लेषण किया जाना चाहिए तथा किसी उत्पादक विशेष से संबंधित किसी सकारात्मक संकेतक को क्षति की अनुपस्थिति का अनुमान लगाने के लिए अलग से अभिज्ञात नहीं किया जा सकता। इसके अतिरिक्त क्षति के संबंध में प्राधिकारी के निष्कर्ष घरेलू उद्योग की स्थिति के समग्र मूल्यांकन पर आधारित होने चाहिए न कि केवल किसी एक क्षति मानदंड पर।

34. वृद्धि:

प्राधिकारी पाते हैं कि जांच अवधि के दौरान घरेलू उद्योग का उत्पादन लगभग समान रहा है, जिसमें मामूली वृद्धि प्रदर्शित हुई है। यह वर्ष 1999-2000 में 81592 मी.टन की तुलना में जांच अवधि के दौरान 82742 मी.टन था। इस बीच में, वर्ष 2000-01 में उत्पादन में 77462 मी.टन की गिरावट आई। तथापि घरेलू उद्योग ने जांच अवधि के दौरान बिक्री में गिरावट के कारण बाजार हिस्सा गंवा दिया। अवधि के दौरान उत्पाद की समग्र मांग भी समान

रही, जिसमें आधार वर्ष के संदर्भ में जांच अवधि के दौरान 0.48% की मामूली वृद्धि प्रदर्शित हुई। समान मांग के चलते तथा संबद्ध देश एवं अन्य स्रोतों से पाटित आयातों के लगातार प्रवाह के कारण घरेलू उद्योग में वृद्धि के कोई स्पष्ट संकेत नहीं मिले हैं।

35. उत्पादकता:

घरेलू उद्योग की उत्पादकता निम्नानुसार पाई गई है:-

	1999-2000	2000-01	2001-2002	जांच अवधि
उत्पादन मी. टन/कर्मचारी	***	***	***	***
सूचीबद्ध	100	95.75	105.53	111

जांच अवधि के दौरान घरेलू उद्योग की उत्पादकता में सुधार हुआ है। ऐसा मुख्य रूप से वर्ष 1999-2002 की तुलना में जांच अवधि के दौरान कर्मचारियों की संख्या में कमी के कारण हुआ है।

36. क्षति संबंधी निष्कर्ष:

प्राधिकारी ने पाया कि उत्पादन क्षमता उपयोग जैसे कारकों में वर्ष 1999-2000 की तुलना में जांच अवधि के दौरान आंशिक सुधार प्रदर्शित हुआ है। उद्योग की उत्पादकता में भी जांच अवधि के दौरान सुधार हुआ। तथापि, संबद्ध वस्तु के कुल आयातों के हिस्से के रूप में संबद्ध देश से पाटित आयातों की मात्रा में वर्ष 200-01 के दौरान 1.22% से जांच अवधि के दौरान 8.59% तक अत्यधिक वृद्धि हुई है। इससे संकेत मिला कि पाटित आयातों की मात्रा में सापेक्ष रूप से वृद्धि हुई है। भारत में संबद्ध वस्तु के उपभोग की तुलना में पाटित आयातों की मात्रा में भी वृद्धि हुई है क्योंकि मांग में पाटित आयातों के हिस्से में वर्ष 2000-01 के दौरान 0.16% से जांच अवधि के दौरान 1.61% तक वृद्धि हुई है। मांग में हिस्सा यद्यपि अधिक नहीं है फिर भी उसमें वर्ष 1999-2000 के दौरान शून्य की तुलना में वृद्धि हुई है। घरेलू मांग में घरेलू उद्योग का हिस्सा वर्ष 1999-2000 के दौरान 73.06% से घटकर जांच अवधि

के दौरान 64.71% हो गया है। यद्यपि घरेलू उद्योग के बाजार हिस्से में गिरावट पूरी तरह से संबद्ध देशों से निर्यातों के कारण नहीं है लेकिन मांग में संबद्ध देश से पाटित आयातों के हिस्से से वास्तविक क्षति का संकेत मिलता है।

पाटित आयातों का कीमत प्रभाव पाटित आयातों के परिणामस्वरूप घरेलू उद्योग द्वारा की गई कीमत कटौती से स्पष्ट है। प्राधिकारी ने पाटित आयातों के परिणामस्वरूप कीमत ह्रास भी पाया। घरेलू उद्योग को कम कीमत पर बिक्री भी करनी पड़ी है क्योंकि पाटित आयातों का पहुँच मूल्य घरेलू उद्योग की क्षति रहित कीमत से बहुत कम, 1-25% की रेंज में है। उद्योग को संबद्ध वस्तु की बिक्री में वित्तीय घाटा हुआ है। इस प्रकार प्राधिकारी निष्कर्ष निकालते हैं कि घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति हुई है।

37. कारणात्मक संबंध

भारतीय बुनकर एसोसिएशन द्वारा यह तर्क दिया गया है कि घरेलू उद्योग को हुई कथित क्षति आयातों के कारण नहीं बल्कि अन्य कारणों से है जो कि देश में अपनाई गई बहु-फाइबर नीति है। आई एस ए के अनुसार घरेलू उद्योग द्वारा पुरानी प्रौद्योगिकी का प्रयोग किया जाता है और उसकी उत्पादन लागत अनुचित रूप से उच्च थी। प्राधिकारी ने अपने विश्लेषण में उत्पादन प्रौद्योगिकी के प्रयोग के परिणामस्वरूप घरेलू उद्योग की उत्पादन लागत पर कोई वास्तविक प्रभाव नहीं पाया है। घरेलू उत्पादकों द्वारा एक्रिलिक फाइबर के उत्पादन के लिए समसामयिक प्रौद्योगिकी का प्रयोग किया जा रहा है। प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादन लागत में कटौती के लिए किए जा रहे प्रयासों को भी देखा। घरेलू उद्योग की उत्पादकता में वृद्धि हुई है। इस मामले में निर्यातक की विनिर्माण प्रक्रिया/प्रौद्योगिकी घरेलू उत्पादकों के समान थी। प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग द्वारा निर्मित एक्रिलिक फाइबर के निर्यात में वर्ष 1999-2000 के दौरान 428 मी.टन से जांच अवधि के दौरान 4620 मी.टन तक की वृद्धि को क्षति का कारण भी नहीं पाया। प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग द्वारा किए गए उच्चतर निर्यातों को क्षति का कारण नहीं पाया क्योंकि घरेलू उद्योग की लाभप्रदता की तुलना घरेलू बिक्रियों में उसकी बिक्री प्राप्तियों से की गई थी और यह पाया गया था कि घरेलू उद्योग को घाटा हो रहा था। क्षति विश्लेषण अवधि के दौरान उत्पाद की मांग लगभग समान बनी रही है। तथापि, उसमें गिरावट नहीं आई है और वह क्षति का कारण नहीं हो सकती है।

प्राधिकारी ने मूल्यवर्धित मदों जैसे यार्न/फैब्रिक/वस्त्रों के निर्यात के लिए एक्रिलिक फाइबर की अनुपलब्धता के बारे में आईएसए के तर्क को भी वैध नहीं पाया क्योंकि मूल्यवर्धित मदों के उत्पादन एवं निर्यात के लिए एक्रिलिक फाइबर के आयात की अपेक्षा को अग्रिम लाइसेंस की शुल्क छूट स्कीम में शामिल किया गया है। प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत में बिक्री जोकि उत्पादन लागत में वृद्धि से अधिक थी, के संबंध में आईएसए के तर्क को भी वैध नहीं पाया है। प्राधिकारी ने स्पष्ट रूप से पाया कि पाटित आयातों से घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत में कटौती हो रही थी। पाटित आयातों का पहुंच मूल्य घरेलू उद्योग की क्षतिरहित कीमत से बहुत कम था।

निर्यातक मै0 जेएससी पॉलिमर द्वारा यह तर्क दिया गया है कि उनके द्वारा किए गए निर्यातों से घरेलू उद्योग को क्षति नहीं हो सकती है। प्राधिकारी ने पाया है कि कुल आयातों में संबद्ध देश से संबद्ध वस्तु के आयातों का हिस्सा वर्ष 2000-01 में 1.22% से बढ़कर जांच अवधि में 8.72% हो गया है। इससे सापेक्ष रूप से वृद्धि का संकेत मिलता है। इसके अतिरिक्त, कुल मांग में संबद्ध देश से पाटित आयातों का हिस्सा 1.61% पाया गया था। मांग के इस हिस्से से, जोकि पाटित कीमतों पर पूरा किया गया है, घरेलू उद्योग की एक्रिलिक फाइबर की बिक्रियों में और कमी होने की संभावना है। प्राधिकारी ने पाया है कि संबद्ध देश से समग्र निर्यात पाटित कीमतों पर हुए थे। जहाँ तक अन्य स्रोतों से हुए निर्यातों का संबंध है, 18064 मी.टन का निर्यात ऐसे स्रोतों से किया गया था जिन पर पाटनरोधी शुल्क लागू है। इटली, स्पेन, पुर्तगाल तथा जापान से एक्रिलिक फाइबर के निर्यातों पर पाटनरोधी शुल्क की हाल में समाप्त हुई निर्णायक समीक्षा में प्राधिकारी ने दिनांक 10 नवम्बर 2004 को जारी जांच परिणामों में पाया कि अन्य स्रोतों जिप पर इस समय पाटनरोधी शुल्क लागू नहीं है, से हुए पाटित आयातों के कारण इस समय घरेलू उद्योग को हुई वास्तविक क्षति अत्यधिक थी। उक्त निर्णायक समीक्षा में प्राधिकारी ने यह भी पाया है कि यदि स्पेन, पुर्तगाल तथा इटली से होने वाले आयातों पर शुल्कों को रद्द कर दिया जाए तो घरेलू उद्योग को पुनः क्षति होने की कोई संभावना नहीं है। इस जांच में प्राधिकारी ने यह भी पाया कि बेलारूस को छोड़कर अन्य देशों, जिन पर पाटनरोधी शुल्क लागू नहीं है, से निर्यात या तो न्यूनतम थे अथवा महत्वपूर्ण नहीं थे। कोई ऐसा वास्तविक कारक जो क्षति का कारण हो सकता है, प्राधिकारी की जानकारी में नहीं आया है।

ड. भारतीय उद्योग के हित

38. सामान्य तौर पर पाटनरोधी शुल्क का उद्देश्य घरेलू उद्योग को क्षति पहुंचा रहे पाटन को समाप्त करना और भारतीय बाजार में मुक्त और उचित प्रतिस्पर्धा की स्थिति को बहाल करना है, जोकि देश के सामान्य हित में है।
39. प्राधिकारी मानते हैं कि पाटनरोधी शुल्क लागू करने से संबद्ध वस्तु अथवा संबद्ध वस्तु का प्रयोग करके विनिर्मित होने वाले उत्पादों की कीमत स्तरें प्रभावित हो सकती हैं और इसके परिणामस्वरूप इन उत्पादों की संबंधित प्रतिस्पर्धात्मकता पर कुछ असर पड़ सकता है। तथापि, पाटनरोधी उपायों के कारण भारतीय बाजार में उचित प्रतिस्पर्धा में कमी नहीं होगी। इसके विपरीत, पाटनरोधी उपायों के लागू होने से पाटन की प्रक्रियाओं से प्राप्त किए गए अनुचित लाभ समाप्त होंगे, घरेलू उद्योग का ह्रास समाप्त होगा और संबद्ध वस्तु के उपभोक्ताओं के लिए अधिक विकल्प उपलब्ध कराने में सहायता मिलेगी। घाटे में चल रहे उद्योग पर प्रभाव को न्यूनतम करने की दृष्टि से प्राधिकारी ने पाटन एवं क्षति मार्जिनों में से कमतर के आधार पर पाटनरोधी शुल्क की सिफारिश करना उचित समझा है। प्राधिकारी नोट करते हैं कि पाटनरोधी उपायों को लागू किए जाने से संबद्ध देशों से आयात किसी भी प्रकार से प्रतिबंधित नहीं होंगे और इसलिए उपभोक्ताओं के लिए उत्पाद की उपलब्धता पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा।

च. निष्कर्ष:

40. उपर्युक्त पर विचार करने के बाद प्राधिकारी यह निष्कर्ष निकालते हैं कि:
- (i) संबद्ध देश से भारत में एक्रिलिक फाइबर का निर्यात सामान्य मूल्य से कम पर किया गया है;
 - (ii) घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति हुई है;
 - (iii) संबद्ध देश से पाटित आयातों से वास्तविक क्षति हुई है।
41. संबद्ध वस्तु के आयातों पर निश्चयात्मक पाटनरोधी शुल्क लगाया जाना आवश्यक माना गया है। तदनुसार, प्राधिकारी एक्रिलिक फाइबर के आयातों पर पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने की सिफारिश करते हैं।

42. पाटन मार्जिन के बराबर अथवा उससे कम पाटनरोधी शुल्क की राशि की सिफारिश करने का निर्णय लिया गया है जिसे लागू किए जाने पर घरेलू उद्योग को हो रही क्षति समाप्त हो जाएगी। आयातों के पहुँच मूल्य की तुलना जांच अवधि के लिए निर्धारित घरेलू उद्योग की क्षतिरहित कीमत से भी की गई है। तदनुसार, यह प्रस्ताव किया गया है कि सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम की अनुसूची 1 के शीर्ष 5501.30 तथा 5503.30 के अंतर्गत आने वाले संबद्ध देश के मूल के अथवा वहाँ से निर्यातित एक्रिलिक फाइबर पर निश्चयात्मक पाटनरोधी शुल्क लगाया जाए। पाटनरोधी शुल्क नीचे दी गई तालिका में कॉलम 9 में उल्लिखित राशि तथा अमरीकी डॉलर/मी.टन में संबद्ध वस्तु के आयातों के पहुँच मूल्य का अंतर होगा यदि संबद्ध वस्तु के आयातों का पहुँच मूल्य नीचे कॉलम 9 में उल्लिखित राशि से कम हो:

क्र स	उप-शीर्ष	माल का विवरण	विनिर्देशन	मूलता का देश	निर्यातक देश	उत्पादक	निर्यातक	राशि	माप की इकाई	मुद्रा
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11
1	5501.30 5503.30	एक्रिलिक फाइबर	सभी डेनियर	बेलारूस	कोई देश	कोई उत्पादक	कोई निर्यातक	1681.35	मी.टन	अम. डा.
2	5501.30 5503.30	एक्रिलिक फाइबर	सभी डेनियर	कोई देश	बेलारूस	कोई उत्पादक	कोई निर्यातक	1681.35	मी.टन	अम. डा.

43. इस प्रयोजन के लिए आयातों का पहुँच मूल्य सीमाशुल्क अधिनियम, 1962 के अंतर्गत किए गए निर्धारण के अनुसार आंकलन योग्य मूल्य तथा सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 के अनुच्छेद 3, 3क, 8ख, 9 तथा 9क के अंतर्गत लगाए गए शुल्कों को छोड़कर सभी सीमाशुल्क होंगे।

44. इस आदेश के विरुद्ध कोई अपील सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम के अनुसार सीमाशुल्क, उत्पाद तथा सेवा कर अपीलीय न्यायाधिकरण के समक्ष की जाएगी।

क्रिस्टी एल० फेर्नान्डेज, निर्दिष्ट प्राधिकारी

MINISTRY OF COMMERCE AND INDUSTRY**(Department of Commerce)****(DIRECTORATE GENERAL OF ANTI-DUMPING AND ALLIED DUTIES)****NOTIFICATION**

New Delhi, the 7th December, 2004

Final Findings**Subject : Anti-dumping investigation concerning import of Acrylic Fibre from Belarus—Final Findings**

No. 14/5/2003-DGAD.— Having regard to the Customs Tariff Act, 1975 as amended in 1995 and the Customs Tariff (Identification, Assessment and Collection of Anti-Dumping Duty on Dumped Articles and for Determination of Injury) Rules, 1995, thereof.

A. PROCEDURE:

2. The procedure described below has been followed with regard to the investigations:-

- i) The Designated Authority (hereinafter referred to as Authority), under the above Rules, received a written application from the Forum of Acrylic Fibres Manufacturers, New Delhi through the participating companies, viz., M/s. Indian Acrylics Ltd., Chandigarh, M/s. Consolidated Fibres and Chemicals Ltd., Kolkata, M/s. Pasupati Acrylon Ltd., New Delhi and supported by M/s Indian Petrochemicals and Chemicals Ltd., Vadodara and M/s Vardhman Acrylics Ltd., Ludhiana, alleging dumping of Acrylic Fibre (hereinafter referred to as subject goods) originating in and exported from Belarus (hereinafter referred to as subject country);
- ii) Preliminary scrutiny of the application revealed certain deficiencies, which were rectified by the applicants;
- iii) The Authority notified the Embassy of subject country in India about the receipt of dumping application made by the petitioner before proceeding to initiate the investigation in accordance with sub-rule (5) of Rule 5 supra;
- iv) The Authority issued a Public Notice dated 1st July, 2003 published in the Gazette of India, Extraordinary, initiating anti dumping proceedings concerning imports of Acrylic Fibre covered under

heading/subheading 5501.30 and 5503.30 of Schedule I of the Customs Tariff Act;

- v) The Authority forwarded copy of the said public notice to the known exporters, importers and to the complainants and gave them an opportunity to make their views known in writing;
- vi) According to sub-rule (3) of Rule 6 supra, the Authority provided a copy of the application to the following known exporters and Embassy of subject country in India;
 - 1. JSC "Polymir"
211440, Novopolotsk,
Vitebsk Region,
Republic Of Belarus.
 - 2. Novopoliteks Llc
208, West State Street,
Trenton,
New Jearsey,
USA
 - 3. Punica Trading Corp. Ltd.
Tisha Street
Riga
Latvia
- vii) Request was made to the Central Board of Excise and Customs (CBEC) and Directorate General of Commercial Intelligence and Statistics (DGCI&S) to arrange details of imports of subject goods;
- viii) The Embassy of the subject country was informed about the initiation of the investigation in accordance with Rule 6(2) with a request to advise the exporters/producers from their country to respond to the questionnaire within the prescribed time. A copy of the letter, petition and questionnaire sent to the exporters was also sent to them;
- ix) A questionnaire was sent to the following known importers/users/industry's associations of subject goods in India calling for necessary information in accordance with Rule 6(4);

Vardhman Spinning & Gen. Mills Ltd.
Chandigarh Road,
Ludhiana – 141 001.
PUNJAB

Nahar Spinning Mills Limited,
373, Industrial Area – A,
Ludhiana – 141 003.
PUNJAB

Malwa Cotton Spg./Mills Ltd.
Industrial Area – A,
Ludhiana – 141 003.
PUNJAB

Rajasthan Spinning & Weaving Mills Ltd.
Bhilwara Bhawan,
40-41, Comm Centre,
New Delhi – 110 065.

Winsome Textile Industries Limited
SCO 144 – 145, Sector 34A,
Chandigarh – 160 022.

Siddhartha Super Spinning Mills Ltd.
211, Gagan Deep,
12, Rajendra Place,
New Delhi – 110 008.

Bhiwani Textiles Mills
Bhiwani
District Hisar
HARYANA

Adinath Textiles Limited
Village : Bholapur
PO Sahabana, Mundia
Ludhiana (Punjab).

Shruti Synthetics Limited,
Village : Loyaran.
Gagunda Road,
Udaipur,
RAJASTHAN

Indian Spinners' Association,
C/o The Millowners' Association,
Elphinstone Building,
10, Veer Nariman Road,
Fort,
Mumbai – 400 001.

Ludhiana Spinners Association,
75, Industrial Area-A,
Ludhiana – 141 003.

- x) The Authority provided an opportunity to the interested parties to present their views orally in a public hearing held on 27th April, 2004. All parties presenting views were requested to file written submissions of their views expressed. The parties were advised to collect copies of the views expressed by the opposing parties and offer rebuttals, if any;
- xi) The Authority made available to all interested parties the public file containing non-confidential version of evidence submitted by various interested parties for inspection, upon request as per Rule 6(7);
- xii) Arguments made by the interested parties after initiation of the investigation, subsequent to the public hearing have been appropriately dealt in the disclosure statement. Arguments made in response to the disclosures have been dealt with in these findings;
- xiii) In accordance with Rule 16 of the Rules supra, the essential facts/basis considered for these findings were disclosed to known interested parties on 26th October, 2004 vide a disclosure statement and comments received on the same have also been duly considered in these findings;
- xiv) Cost investigations including spot verification (as deemed necessary) of the domestic industry were also conducted to work out optimum cost of production and cost to make and sell the subject goods in India on the basis of Generally Accepted Accounting Principles (GAAP) and the information furnished by the domestic industry;
- xv) The Authority conducted on the spot verification of information furnished by the exporter M/s JSC Polymir, Novopolotsk, Belarus;
- xvi) *** in this notification represents information furnished by the interested parties on confidential basis and so considered by the Authority under the Rules;
- xvii) The investigation covered the period from 1st April, 2002 to 31st March, 2003. The injury analysis covered the three preceding years 1999-2000, 2000-2001, 2001-2002 and the POI.
- xviii) Copies of the Initiation Notice were also sent to FICCI, CII, ASSOCHAM etc. for wider circulation.

B. VIEWS OF PETITIONERS, EXPORTERS, IMPORTERS AND OTHER INTERESTED PARTIES AND EXAMINATION BY AUTHORITY.

3. The views expressed by various interested parties have been discussed in the disclosure statement. The views which have not been discussed earlier in the disclosure statement and those now raised in response to the disclosure statement are discussed in the relevant paragraphs herein below to the extent these are relevant as per rules and have a bearing upon the case. The arguments raised by the interested parties have been examined, considered and, wherever appropriate, dealt in the relevant paragraphs herein below.

4. After the initiation of the investigation, response had been received from the following:

Exporter: -

M/s JSC Polymir, Novopolotsk, Belarus;

Importers:

On behalf of the importers, Indian Spinners Association (ISA) submitted arguments. However, none of the importers submitted questionnaire response. The Authority had also advised ISA to impress upon the importers to file questionnaire response. The domestic industry has argued that ISA does not have locus standi to represent the interest of spinners. The Authority considered the arguments made by the domestic industry as regards the claim of ISA to represent the interests of Spinning Industry. ISA has represented the spinners in the earlier investigation concerning imports of Polyester Staple Fibre (PSF) and Acrylic Fibre. The Authority considered it appropriate to examine the arguments made by ISA in this investigation.

5. Product under Consideration :

The product under consideration in this investigation is Acrylic Fibre in all Deniers (hereinafter referred as subject goods). Acrylic Fibre is a long chain of synthetic polymer composed of at least 90% by weight of Acrylonitrile units. Acrylic Fibre can be Acrylic staple fibre, acrylic tow or acrylic top. Petitioners have claimed that Acrylic Fibre is classified under Chapter 55 of Customs Tariff Classification Major Heads 5501 and 5503 with respective six digit classification 5501.30 and 5503.30. These Custom classifications are however, indicative only and are in no way binding on the scope of the present investigation. It has been argued by ISA that acrylic fibre and tow are two distinct and different items, which cannot be clubbed together. There are two separate Customs classification, one for tow and another for fibre. While fibre is used as raw materials on spindles, tow is used for knitting purposes. It has also been argued by ISA that Authority should have asked the domestic industry to segregate data and submit the same for unbiased consideration. It has been argued by the exporter M/s JSC Polymir that they did not produce mod acrylic fibre during the

investigation period and hence did not sell it. The acrylic fibre should be distinguished from mod acrylic fibre due to technical characteristics and consumer properties, price factor. Acrylic and mod acrylic fibre are not like article in all respects and there are no features proving their close similarity.

The Authority has considered these arguments, and is of the view that acrylic fibre and tow are produced by the same manufacturing process. Tow is long and continuous chain of fibre and staple fibre is cut in various lengths as per the requirement of the consumers. The domestic producers produce both forms. The producers of acrylic fibre report their entire annual reports mentioning the product as acrylic fibre only. The issue had also been decided by the Hon'ble CESTAT in an appeal No.C/73/99-AD of M/s Oswal Woollen Mills in the matter of final findings issued by the Designated Authority in respect of imports of acrylic fibre from Japan, Spain, Portugal and Italy. The Authority holds that the product under consideration is acrylic fibre which can be acrylic staple fibre, acrylic tow or acrylic top. As regards the arguments of M/s JSC Polymir regarding mod acrylic fibre, Authority found that the exporter had neither produced nor exported mod acrylic fibre during the POI. The domestic industry had also produced acrylic fibre in the POI. The comparison is being made between the acrylic fibre only and there was no requirement to make any separate calculation for mod acrylic fibre.

6. Like Article :

The petitioner has claimed that there is no difference between the product manufactured by them and the imported product. They have also stated that the subject product manufactured in India by the domestic producers is commercially and technically substitutable to the imported product. The acrylic fibre produced by the Indian industry and imported from the subject country is comparable in terms of characteristics such as physical and chemical, manufacturing process and technology functions and uses, product specification and tariff classification. The Authority has examined the arguments of M/s Polymir as regards like article and has found that the product exported by Polymir was acrylic fibre and the product manufactured by the domestic producers was also acrylic fibre. The imported product is identical to the domestically produced acrylic fibre and is therefore, considered as like article.

7. Domestic Industry :

The application had been filed by Forum of Acrylic Fibres Manufacturers, New Delhi through the participating companies, viz., M/s. Indian Acrylics Ltd., Chandigarh, M/s. Consolidated Fibres and Chemicals Ltd., Kolkata, M/s. Pasupati Acrylon Ltd., New Delhi. The petitioners' share in the total domestic production of Acrylic Fibre is more than 50% and the petitioners satisfied the criteria of standing to file the petition in terms of Rule 5(3) (a) of the Rules supra. Two other domestic producers, viz., M/s. Indian Petrochemicals and Chemicals

Ltd., Baroda; and M/s. Vardhman Acrylics Ltd., Ludhiana supported the petition. M/s Vardhman Acrylics Ltd. also filed information relating to costing and injury. The Authority has considered the four domestic producers viz., M/s. Indian Acrylics Ltd., Chandigarh, M/s. Consolidated Fibres and Chemicals Ltd., Kolkata, M/s. Pasupati Acrylon Ltd., New Delhi, and M/s Vardhman Acrylics Ltd. to represent the domestic industry within the meaning of Rule 2(b) as their collective output of the subject goods constitute a major proportion of the total domestic production of the subject goods.

C. EXAMINATION OF CLAIMS REGARDING NORMAL VALUE, EXPORT PRICE AND DUMPING MARGIN.

8. Copy of Initiation Notice was sent to the Embassy of subject country, the exporters, importers and domestic industry. In response to the initiation notification M/s JSC Polymir Novopolotsk, Belarus (Polymir) had furnished response to the exporter questionnaire. They also furnished response to the Market Economy Treatment (MET) questionnaire. The Authority conducted on-the-spot verification of information furnished by Polymir at their plant and office at Novopolotsk. The information furnished by Polymir in respect of their exports, domestic sales, cost of production relating to Acrylic Fibre was verified. Their claim regarding market economy treatment was also examined and verified. The verification team also held discussions with the officials of Belarusian State Concern for Oil and Chemistry- 'BELNEFTEKHIM', Dept of Foreign Economic Relations, Government of Belarus at Minsk in respect of market economy treatment to the company. A copy of the verification report was sent to M/s Polymir and the Embassy of Belarus in India. However, no comments were received thereon.

9. Domestic sales as shown in the Appendix I

The Company had given information regarding sales of *** MT of Acrylic Fibre in home market during the POI i.e. April 2002 to March 2003. The Company made sales in home market on uniform sales price taking into account concluded contracts. In the home market, the Company sold dyed and undyed fibre. During the verification, it was confirmed that the information regarding sale price given in Appendix 3B was in respect of undyed fibre. The Company had made the exports to India of undyed fibre. On verification, it was seen that the Company had converted the prevailing contract price shown in Belarusian Rouble (BRB) into US Dollar by taking the exchange rate. The exchange rate used was as per the rate established by the National Bank of Republic of Belarus. The information relating to domestic sales, quantity and price was found to be in order. The domestic sales were made on FCA Novopolotsk basis i.e. ex-factory. All charges relating to transportation are traders' responsibility. The payment terms were 100% in advance.

10. Cost of Production & Market Economy Treatment

The Company had claimed that it works by market principles of pricing and structuring of the cost and that the accounting of the costs on production of Acrylic Fibre authentically reflects the costs connected to its production and sales. The Company further claimed that the cost of raw material and materials used for production of the Acrylic Fibre corresponds to the market value. Further, by the law of the Republic of Belarus (about pricing), it is established that in the Republic of Belarus, free prices are applied and all legal persons are given the right to establish the price of a good independently or as agreed to the buyer. As per the company, the sales of acrylic fibre on all sales markets including internal, European, Asian and Indian are made under the prices not lower than the costs of production plus profit.

It was also claimed by the company that the market character of economy confirms the circumstance that in the constitution of Belarus, the principles of inviolability of the property (Article 44) is fixed. As per this constitution, it is established that the forced withdrawal of a property from a proprietor is not allowed, except for cases, when the withdrawal of property is made on motives of public necessity at observance of conditions and order determined by the law, with duly and complete compensation of cost of withdrawn property, and also according to the decree of the Court.

As regards exchange rate, it has been claimed that the currencies exchange rates are determined by market principles by results of trade on the Belarusian currency stock exchange.

11. In response to the Disclosure Statement, M/s Polymir has argued that:

- (i) The purchase of hydrocarbon feed stock is carried out on open tender basis and it has the effect of market principles with allowance of supply and demand.
- (ii) The price of acrylonitrile (ACN) is determined by its cost of production.
- (iii) The approach to determination of price of ACN by Polymir is reasonable and is based on specific features of technological process and by no means is stipulated by influence of the State.
- (iv) The prices of utilities are not special for Polymir. The prices are established on the basis of the tariffs, based on which the utilities are imported to Belarus.
- (v) The accounting is carried out according to the legislation of the Republic of Belarus about accounting and reporting and is based on the constitution of the Republic of Belarus.
- (vi) The influence of the State is ensured only at a legislative level and it affects all legal entities irrespective of the form of ownership which are registered in the Republic of Belarus. The state regulation is aimed to

- increase efficiency of purchases and sale to increase of profitability and reduction of production costs.
- (vii) The fact that the State is the main shareholder of the company, cannot be an evidence that JSC Polymir does not work on the basis of market principles.
 - (viii) JSC Polymir further argued that the information furnished by them in response to MET questionnaire and also the arguments made in response to the disclosures deny the claim that JSC Polymir is not the company working by principles of market economy.
 - (ix) Further, it has been argued that for constructing the normal value for acrylic fibre, the cost of acrylic fibre should be taken, including ACN at the manufacturer of acrylic fibre in the third country and such manufacturer should possess the capacity for production of ACN.

12. Examination by Authority

The cost of production of acrylic fibre as given in questionnaire response was verified with reference to the basic financial reports of the company relating to the POI. Cost of basic input Acrylonitrile (ACN) was verified from purchase records.

The company has capacity of *** mt/per year for Nitron D, *** mt/per year for Nitron C and *** mt/per year for Nitron M. These are the acrylic fibers and known by these descriptions. The company was earlier state enterprise and in September 2002 (during POI) became a joint stock company. However, 99.9% shares are with the state. A supervising council appoints the In-charge of the company and the council is represented by shareholders of the company. As 99.99% shares are with the Ministry of Economy, Belarus, thus the supervising council appointing the In-charge cannot be said to be acting independently and without interference from state.

The Authority has considered the argument made by M/s JSC Polymir in response to the Disclosure Statement. As per the verification conducted by the DGAD as regards the arrangement for procurement of Naphta and production of ACN it could not be established that the price of ACN as reflected in the cost of production of Acrylic fibre is fully reflecting the price of raw material driven by market signals reflecting supply and demand conditions as there appeared significant state interference. There was also presence of barter arrangement in respect of sale of significant quantity of Acrylic fibre during the POI. This sale of barter arrangement was also confirmed by the Company. There was also an indication that Electricity/power is provided to the company at special prices. It could also not be clearly demonstrated that the company followed Generally Accepted Accounting Principles (GAAP) during the POI.

During verification of information, it was noted that there is a Law of Republic of Belarus of May 10, 1999, N 255-3 about Pricing. Chapter 3 is regarding Pricing

Control. As per Article 7 of this Chapter, there is an application of controlled prices (tariffs) in respect of goods of subjects of economic management having the leading position on the merchandize market of Belarus and included in the state register. During verification it was confirmed that sale of acrylic fibre in domestic market is covered by the above provisions of pricing law.

The main shareholder of M/s JSC Polymir is the Ministry of Economics of Republic of Belarus which possesses 99.904% of the shares. As per Company's own statement, the State's influence in setting up prices, expenses, expenditures, including raw materials, the cost of technology and manpower is put into practice only in form of standard law acts, that are obligatory to execution by all companies of Belarus independent of ownership's form. In view of the applicability of above law relating to pricing on the home market sales of acrylic fibre and also almost 100% State ownership of the company, the Authority found it difficult to accept the contention of the company that it is free to make decision about prices and expenditure etc. by itself taking into account the demand and supply levels, market situation, production cost. As regards the arrangement for procurement of Naphta and production of ACN it could not be established that the price of ACN as reflected in the cost of production of Acrylic fibre is fully reflecting the price of raw material driven by market signals reflecting supply and demand conditions as there appeared significant state interference. The Authority holds that there is rather a strong possibility and evidence of significant State interference in the decisions of the company regarding prices, costs and inputs, including raw materials, cost of technology, investments. Therefore, the Authority holds that the cost of production as shown in the books of accounts may not be reflecting fully the cost of production.

The presumption of JSC Polymir being a company from non-market economy has not been fully rebutted on the basis of information furnished and verification made as per the requirement of para 8(3) of Annexure I of Anti Dumping Rules. Therefore, market economy treatment has not been accorded to JSC Polymir. Accordingly, normal value determination cannot be based on domestic sales price of acrylic fibre in Belarus. In accordance with para 7 of Annexure I, normal value may be determined on the basis of constructed value for the price actually paid or payable in India for the like product, duly adjusted to include a reasonable profit margin. The Authority does not find the argument of M/s Polymir acceptable as regards fixing the normal value of acrylic fibre with reference to a producer in third country having capacity for production of ACN. As per the provision of para 7 of Annexure I of Anti Dumping Rules, normal value in respect of imports from non-market economy country can be determined on the basis of price actually paid and payable in India for the like product duly adjusted, if necessary, to include a reasonable profit margin. Accordingly the authority has constructed normal value on the basis of price actually paid or payable in India for the like product. For this the international price of major raw material Acrylonitrile has been considered taking into account the actual evidence of imports in India. The conversion costs, selling, general and administrative

expenses have also been considered keeping in view the most efficient domestic producer. A reasonable profit margin has been added to arrive at the normal value of US\$ *** for Belarus.

13. Export Price :

The Company had made exports of *** MT of Acrylic Fibre to India during the POI. These sales were made to three customers on FCA Novopolotsk basis. The payment terms were ***. No credit was involved. There was no payment of commission to any agent. No adjustment on account of inland freight, overseas transportation was involved as the delivery was FCA Novopolotsk. The authority found that the volume of export from Belarus as shown in Polymir's response almost corresponds to the DGCI&S statistics. There is no evidence of any other producer/exporter of Acrylic Fibre from Belarus. The weighted average export price for Belarus is determined as US\$ ***

14. Dumping Margin :

The Authority followed the consistent practice of adopting the principles governing the determination of Normal Value, Export Price and Margin of Dumping as laid down in Annexure I to the anti-dumping rules. Dumping margins have been determined on the basis of a fair comparison of Export Price with the Normal Value in pursuance of the principle laid down in Para 6 of Annexure-1 to the Rules. The comparison is at the same level of trade, i.e. Ex-factory level. Normal Value at ex-factory level has been compared with the export price at ex-factory level of comparable type of acrylic fibre. Based on the Normal Value and export price as determined above, the Authority found the following dumping margin for Belarus (%):

Normal Value	\$***
Export Price	\$***
Dumping Margin	\$***
Dumping Margin %	49.14%

D. INJURY TO THE DOMESTIC INDUSTRY

15. Rule 11 of Anti Dumping Rules reads as follows:
"Determination of Injury:

(1) In the case of imports from specified countries, the designated authority shall record a further finding that import of such article into India causes or threatens material injury to any established industry or materially retards the establishment of any industry in India;

(2) The designated authority shall determine the injury to domestic industry, threat of injury to domestic industry, material retardation to establishment of domestic industry and a causal link between dumped imports and injury, taking

into account all relevant facts, including the volume of dumped imports, their effect on price in the domestic market for like articles and the consequent effect of such imports on domestic producers of such articles and in accordance with the principles set out in Annexure II to these rules."

16. The principles for determination of injury set out in Annexure-II of the Anti-Dumping Rules lay down that:

a. A determination of injury shall involve an objective examination of both (a) the volume of dumped imports and the effect of the dumped imports on prices in the domestic market for like article and (b) the consequent impact of these imports on domestic producers of such products.

b. While examining the volume of dumped imports, the said Authority shall consider whether there has been a significant increase in the dumped imports, either in absolute terms or relative to production or consumption in India. With regard to the effect of the dumped imports on prices as referred to in sub-rule (2) of Rule 18 the Designated Authority shall consider whether there has been a significant price under-cutting by the dumped imports as compared with the price of like product in India, or whether the effect of such imports is otherwise to depress prices to a significant degree or prevent price increase which otherwise would have occurred to a significant degree.

17. Issues raised by the domestic industry :

Domestic Industry had furnished information on all injury parameters and cost of production. It has been claimed by the domestic industry that it has suffered injury due to dumping in this period from various countries including the subject country, investigation against which were either under process or anti dumping duty is in force. The surplus unutilized capacity of the product world over is resulting in exports of the product below prevailing normal value. This has resulted in continued dumping and continued injury to the domestic industry. The injury to the domestic industry is required to be seen in the light of existing duties and on-going investigations against other countries. It has further been argued by the domestic industry that Indian Spinners Association (ISA) does not have locus standi to represent the interests of Spinners. Further, they cannot be treated as interested party within the meaning of Rule 2(c).

18. Issues raised by ISA :

- (i) ISA is a representative body of consumers. Letters of few spinning mills have been furnished in this regard.
- (ii) There is a need to make separate calculation for filament tow and acrylic fibre.

- (iii) Domestic industry has failed to establish Belarus as non-market economy.
- (iv) Although anti dumping duty is in force for quite sometime on imports of acrylic fibre from practically all the acrylic fibre producing countries in the world, the domestic industry still continues to allege that it continues to suffer because of imports. It only means that the alleged sufferings of the domestic industry are not because of imports but are due to some other reasons, which is the multi-fibre policy adopted in our country.
- (v) Because of the outmoded technology used by some of the units of the domestic industry, cost of production was unduly high in some cases and not in alignment with realistic price structure. The unrealistically high benchmark for cost of production coupled with the imposition of anti dumping duty practically from all countries of the world has helped the domestic industry to maintain the prices of subject goods at an artificially high level.
- (vi) It is not possible to make exports of value added items like yarn or fabrics or garments containing acrylic fibre at such high prices charged by domestic industry. Hence to service export markets developed by the manufacturers of value added items, users of acrylic fibre are importing acrylic fibre under advance licensing system.
- (vii) Another reason for increase in imports is that there is a sudden spurt in exports of acrylic fibre from India. Exports jumped from 321 tons in 2001-02 to 5176 tons. This has considerably reduced availability of quality fibre from the domestic industry.
- (viii) Decline in sales can not be a valid argument as total sales including export sales should be considered.
- (ix) As regards selling price, domestic industry has accepted that selling prices have increased. Also it has contended that the increase in selling prices is due to increase in cost of production. This clearly means that prices have been increased much more than the increase in the cost of production and increased prices now neutralize the losses made by the industry in the earlier years.
- (x) Domestic industry's arguments of price suppression/ depression are bald statements and not relevant.
- (xi) As regards profitability, if selling prices has neutralized the increase in cost of production and past losses as contended by the domestic industry, there is no adverse point so far as profitability is concerned
- (xii) Productivity has shown improvement and hence no injury.

- (xiii) Acrylic fibre is a substitute for wool and garments manufactured from acrylic fibre are used by the poor strata of society as winter clothing. No injury has been sustained by the domestic industry.

In response to the Disclosure Statement, ISA has given comments on the various injury parameters. As per ISA, the Authority has found that factors such as production, capacity utilization and productivity have recorded improvement. The conclusion about the volume of dumped imports is wrong because there is no deduction of imports of mod acrylics. Imports are mostly under advance licences and also the impact of increased exports of acrylic fibre has not been taken into account. In the views of ISA, there is no case for imposition of anti dumping duty on imports of acrylic fibre.

19. Examination by the Authority :

The Authority has considered the arguments made by the domestic industry as regards the claim of ISA to represent the interests of Spinning Industry. ISA has represented the spinners in the earlier investigation concerning imports of Polyester Staple Fibre (PSF) and Acrylic Fibre. None of the members of ISA, i.e. the importers and users of acrylic fibre have filed a questionnaire response in this investigation, though few importers had given authorization to ISA to represent their interests. It would have been appropriate for the importers to have filed information on questionnaire response to assist the Authority. However, the Authority has considered it appropriate to examine the arguments made by ISA in this investigation. The arguments made by ISA have been dealt with appropriately under the relevant injury parameters. After analysis and evaluation of information furnished by domestic industry and verification made, the Authority found the following injury information.

20. Volume of Imports :

The volume of imports as per DGCIS published data has been as under:

Imports	Unit	1999-00	2000-01	2001-02	2002-03
Belarus	MT	0	171	40	1839
Other Countries	MT	14258	13797	9629	19254
Total Imports	MT	14258	13967	9669	21093

The imports from Belarus were nil during 1999-2000 and were 171 MT in 2000-01. These increased to 1839 MT during POI. There was an increase of imports from subject country from 1.22% in 2000-01 to 8.72% as a share of total imports during the POI. Therefore, there was an increase in imports of subject goods from subject country in absolute terms.

As regards the arguments of ISA that the volume of import data cannot be relied as it included imports of mod acrylic, the Authority has found that the imports of mod acrylic fibre was mainly from Japan of about 1300 MT. The imports from subject country i.e. Belarus, were of acrylic fibre. Exclusion of mod acrylic fibre from total imports would only result in the higher percentage of imports from Belarus as the total imports of acrylic fibre would get reduced. Therefore, the inclusion of mod acrylic fibre in the total imports has not distorted the results of the analysis. As regards the arguments that most of the imports are against advance licence, the Authority found that such imports, as long as these are of the like article, are to be considered as part of the examination for injury analysis of volume effect of imports.

21. Market share:

The Authority found that the market share of the domestic industry and the imports from the subject country in the demand of subject goods has been as under :

Demand	Unit	1999-00	2000-01	2001-02	2002-03
Sales of domestic industry	MT	83000	75233	86053	74080
Sales of IPCL	MT	16346	15084	17866	18981
Total Imports	MT	14258	13967	9669	21093
Demand	MT	113604	104285	113587	114154
Trend	Indexed	100.00	91.80	99.99	100.48
Market share in Demand					
Domestic industry	%	73.06	72.14	75.76	64.89
Trend	Indexed	100.00	98.74	103.69	88.81
IPCL	%	14.39	14.46	15.73	16.62
Trend	Indexed	100.00	100.53	109.32	115.49
Other Countries	%	12.55	13.23	8.48	16.88
Trend	Indexed	100.00	105.41	67.86	136.25
Subject Country	%	0.00	0.16	0.04	1.61
Trend	Indexed	0.00	100.00	21.52	981.18

The Authority has found that the share of imports of subject goods from subject country as a % of demand has increased from 0.16% during 2000-2001 to 1.61% during POI. There is thus an increase in the dumped imports from subject country in relation to the demand of the product in the country. However, the share of subject country in demand is quite small. The share of domestic industry in total demand has however, gone down from 73.06% in 1999-2000 to 64.89% during the POI. ISA has made the argument that if domestic production has increased more than imports, the market share of domestic producer has gone up. The Authority found the argument as not tenable because the demand is computed taking into account the sales of the domestic industry and total imports. The Authority found that the methodology adopted for computing the

demand and market share is correct and as per the analysis the share of domestic industry in demand has come down whereas the share of imports from the subject country has increased.

22. Production and Capacity Utilisation:

The production and capacity utilization of the domestic industry has been as under :

	Unit	1999-00	2000-01	2001-02	2002-03
Capacity	MT	89500	89500	89500	89500
Production	MT	81592	77462	81754	82742
Capacity utilization	%	91.16	86.55	91.34	92.45
Trend	Indexed	100.00	94.94	100.20	101.41

The Authority found that there has been improvement in the capacity utilization of the domestic industry during the period of investigation in comparison to the earlier years.

23. Sales Volume:

Sales volumes of domestic industry decreased from 83000MT in 1999-2000 to 74080 MT in POI as under :

1999-2000	2000-2001	2001-2002	2002-2003
83000	75233	86053	74080
100	90.64	103.68	89.25

The Authority found that the volume of sales of domestic industry have decreased during the POI in comparison to year 1999-2000. It has been argued by ISA that sales volume should include domestic and export sales. The Authority is of the view that for examination of injury as per sub-para (iv) of Annexure II of Anti Dumping Rules, the economic factor relating to decline in sales is to be seen in the context of domestic sales as it would be relevant to examine the impact of the dumped imports on the domestic industry. The export performance of the domestic industry is to be examined in the causal relationship of the dumped imports under sub-para (v) of Annexure II of the Rules. Accordingly, the Authority holds t^h the methodology for analysis of domestic sales volumes of the domestic industry is appropriate.

24. Inventory :

The inventory of finished stock and inventory as number of days sale in stock has been as under :

Unit	1999-2000	2000-2001	2001-2002	2002-2003
MT	3660	5744	1020	5061
Indexed	100	156.94	27.86	138.28
Number of days sale in stock	16.09	27.87	4.32	24.93
Indexed	100	173.21	26.85	154.94

The Authority found that the inventory of finished goods held by the domestic industry has increased considerably at the end of POI in comparison to the year 1999-2000. In terms of number of days sale in stock also the inventory was high as seen by the indexed figures of 154.94 in POI in comparison to 100 in base year.

25. Price Undercutting

The price undercutting due to the dumped imports was found as under during POI:

Average NSR	***
Landed Value	66672
Price Undercutting	***
%age Price Undercutting	***%
Price under-cutting range	6-15%

Arguments have been made by ISA that there is a need for separate calculation for filament tow and acrylic fibre. During the verification, the Authority did not find any material difference in the sales price of acrylic fibre or tow to warrant a separate comparison. On a comparison of the weighted average net sales realization of total acrylic fibre of the domestic industry with the landed value, the price undercutting was found to be significant. It has also been argued by ISA that comparison of landed value of imports is to be made with the selling price of domestic industry at the mill gate of the consumers. The Authority has made comparison of net sales realization of domestic industry after excluding excise, discounts, freight and sales tax with the landed value of imports at the port. Therefore, the comparison is at the same level and has not led to any distortion.

26. Price underselling

The Authority found the price underselling as a result of dumped imports as under :

Landed Value	66672
NIP	***
Price underselling	***
% Price underselling	***%
Price underselling range	15-25%

The Authority found the price under selling as a result of dumped imports to be significant. ISA has argued that incidence of transportation from the port to consumers, handling charges, sales tax, octroi should be added to the landed value for comparison with the NIP. The Authority holds that the computation of non-injurious price (NIP) is at the ex-factory level and its comparison with the landed value does not lead to any distorted analysis. The Authority also does not find merit in the argument of ISA that the export price of the domestic industry should be the NIP. There is no logic in the argument to treat export price of domestic industry as NIP because the export price can be dependent on several factors like refund of draw back, any other tax refund, pricing decision influenced by any strategy to enter a particular market.

27. Factors affecting domestic prices :

The Authority notes that the selling prices of the domestic industry are linked to the raw material cost and the prices of imports of subject goods from different countries. The price of major raw material Acrylonitrile underwent volatility during the period of injury analysis. The domestic industry has increased its productivity, however, the selling price of acrylic fibre was under pressure due to the dumped imports. There is significant price undercutting of the domestic industry by the dumped imports from subject country. The dumped imports also had an effect of depressing the prices of the domestic industry. The domestic industry was forced to protect its market share by lowering their prices to meet the low priced imports. The export price from Belarus and the sales realization of domestic industry has been as under:

	2000-01	2001-02	POI
Belarus Export Price Rs./MT	57930	63430	55010
Indexed	100	109.49	94.95
Sales Realization of domestic industry Rs./MT	***	***	***
Indexed	100	83.76	92.32

The ISA has argued that factors affecting domestic prices can be inefficiency of the domestic industry, prices of competing fibres or uneconomic size of the plant. The Authority found that the capacity utilization and productivity of the domestic industry had improved during POI and therefore, these cannot be held as ground of injury. The demand of the subject goods has not come down hence prices of competing fibres cannot be held as a factor affecting domestic prices. As regards the uneconomic size of the plant, this has to be seen in the Indian

context. The perceived efficiency, if any, of any foreign producer on account of economic size of the plant gets reflected in the normal value analysis for that country. Moreover, no data giving any comparative cost advantages was furnished which could be commented upon by the domestic industry. As for the exporter in question, the Authority had examined the records and even on the basis of the exporter's cost of production (though not accepted on account of NME), the exports made were at dumped prices.

28. Magnitude of the margin of dumping :

The Authority found that the magnitude of the margin of dumping of subject goods from the subject country was 49.14% and which is considered significant.

29. Employment :

The employment level of the domestic industry has been as under :

1999-2000	2000-2001	2001-2002	2002-2003
100	99	95	91

The Authority found that there was a decline in the level of employment of the domestic industry, though the production of the domestic industry had increased. This could be attributed to the attempts of the domestic industry to bring down costs.

30. Wages :

The wages paid by the domestic industry has been as under:

	1999-2000	2000-2001	2001-2002	2002-2003
Wages Rs. lacs	1906.68	2107.68	2139.75	2191.21
Indexed	100	110.54	112.22	114.92

31. Profitability:

The profitability of the domestic industry in the sale of Acrylic fibre has been found to be as under:

Year	Net Sales Realization (Rs./PMT)	Cost Production (Rs./PMT)	of Profit/Loss per MT	Indexed
1999-2000	***	***	***	100

2000-2001	***	***	***	(-)12000
2001-2002	***	***	***	(-)10371
2002-2003	***	***	***	(-)2066

The authority found that the domestic industry has suffered direct losses on per unit sale of subject goods during the POI. The per unit losses on the sale of subject goods have though decreased during the POI in comparison to the previous two years, however, the domestic industry suffered losses in sales.

The profitability on capital employed (gross fixed assets) for the domestic industry has been found as under :

	1999-2000	2000-2001	2001-2002	2002-2003
Indexed	100	(-) 11857	(-) 11142	(-) 2542

The domestic industry is found to be making financial losses on the gross fixed assets. ISA has argued that the profitability of domestic industry is as a result of technology used by two producers and also the uneconomic plant size. The Authority found these arguments as not sustainable as discussed in earlier analysis. The profitability of the domestic industry is linked to the sales realization which was impacted by the dumped imports.

32. Evidence of Lost Contracts

There was no specific evidence regarding loss of orders. However, the sourcing of acrylic fibre from subject country by the domestic user industry made it evident that the domestic industry had lost some orders to the dumped imports from subject country.

33. Actual and potential negative effect on cash flows

The Authority found that the cash flow position of the domestic industry showed decline during the POI in comparison to the year 1999-2000, however, the cash flow position had improved during the previous year 2001-02. The domestic industry suffered financial loss which has caused strain on the cash flow position of the domestic industry. ISA has made arguments that M/s Vardhman Acrylics Ltd. was able to make profit because of its capital restructuring and recourse to efficient management practices. The Authority holds the view that the performance of domestic industry as a whole is to be analyzed and any positive indicator of any single producer cannot be selectively identified to project absence of injury. Moreover, Authority's conclusions on injury are to be based on an overall assessment of the state of the domestic industry and not merely based on only one injury parameter.

34. Growth:

The Authority found that the production of the domestic industry remained somewhat flat during POI, showing a marginal increase. It was 82742 MT during POI in comparison to 81592 MT during 1999-2000. In between, the year 2000-01 saw a decline in production to 77462 MT. The domestic industry, however, lost market share as its sales declined during POI. The overall demand of the product also remained somewhat flat during the period with a marginal increase of 0.48% during POI with reference to the base year. In the face of a flat demand, and constant flow of dumped imports from subject country and other sources, there did not appear to be any clear sign of growth in the domestic industry.

35. Productivity :

The productivity of the domestic industry has been found as under :

	1999-2000	2000-01	2001-02	POI
Production MT/employee	***	***	***	***
Indexed	100	95.75	105.53	111

The productivity of the domestic industry has improved during the POI. This is largely due to lesser number of employees during the POI in comparison to the year 1999-2000.

36. Conclusions on Injury:

The Authority found that factors such as production, capacity utilization, showed marginal improvement during the POI in comparison to the year 1999-2000. The productivity of the industry also improved during POI. The volume of dumped imports from subject country as a share in the total imports of subject goods has, however, increased significantly from 1.22% during 2000-01 to 8.72% during POI. This indicated that the volume of dumped imports has increased in absolute terms. There is also an increase in the volume of dumped imports in relation to the consumption of the subject goods in India as the share of dumped imports in demand has increased from 0.16% during 2000-01 to 1.61% during the POI. This share in demand, though not significant, had risen from nil share during 1999-2000. The share of the domestic industry in the domestic demand has declined to 64.89% during POI from 73.06% during 1999-2000. Though the loss of market share of domestic industry could not be fully attributed to the exports from the subject country but the share of the dumped imports from subject country in the demand indicated material injury.

The price effect of the dumped imports is evident from the price undercutting suffered by the domestic industry as a result of the dumped imports. The Authority also found price depression as a result of the dumped imports as the domestic industry was forced to protect its market share by lowering their prices to meet the low priced imports. The industry also has suffered price underselling as the landed value of dumped imports is significantly lower, in the range of 15-25%, than the non-injurious price of the domestic industry. The industry has suffered financial losses in the sale of subject goods. The Authority thus concludes that the domestic industry has suffered material injury.

37. Causal Link

Arguments have been made by Indian Spinners Association that the alleged suffering of the domestic industry is not because of imports but due to other reasons which are the multi-fibre policy adopted in the country. As per ISA, the domestic industry uses old technology and its cost of production was unduly high. The Authority, in its analysis has not found any material impact in the cost of production of domestic industry as a result of use of production technology. The domestic producers are using the contemporary technology for production of acrylic fibre. The Authority also saw the attempts made by the domestic industry to cut down on the cost of production. The productivity of the domestic industry has increased. The manufacturing process / technology of the exporter in this case was similar to that used by the domestic producers. The Authority also does not find the increase in exports of acrylic fibre made by the domestic industry, from 428 MT during 1999-2000 to 4620 MT during POI, as a cause of injury. The Authority did not find the higher exports made by the domestic industry as cause of the injury because the profitability of the domestic industry in its sales realization in domestic sales had been compared and was found that the domestic industry was making losses. The demand of the product has remained almost same during the injury analysis period. It has, however, not declined and cannot be a cause of the injury. The Authority also did not find as valid, the argument of ISA regarding non-availability of acrylic fibre for export of value added items like yarn / fabric / garments, since the requirement for import of acrylic fibre for production and export of value added items is covered by the duty exemption scheme of Advance Licence. The Authority also did not find the argument of ISA as valid as regards the increase in selling prices of the domestic industry, which was more than the increase in cost of production. The Authority clearly found that the dumped imports were under cutting the sales realization of the domestic industry. The landed value of the dumped imports was significantly lower than the non-injurious price of the domestic industry.

It has been argued by the exporter, M/s JSC Polymir that exports made by them cannot be a cause of injury to the domestic industry. The Authority has found that the share of imports of subject goods from subject country in total imports has increased from 1.22% in 2000-01 to 8.72% in POI. This indicates increase in absolute terms. Moreover, the share of the dumped imports from subject

country was found to be 1.61% in total demand. This share in demand, which is at dumped price, has the potential to further depress the sales of acrylic fibre of the domestic industry. The Authority has found that the entire exports from subject country were at dumped price. As regards exports made from other sources, 18064MT were accounted for by exports from sources attracting anti-dumping duty. In the recently concluded sunset review of anti dumping duty on exports of Acrylic Fibre from Italy, Spain, Portugal and Japan, the Authority found in the findings issued on 10 November 2004, that the material injury suffered by the domestic industry at present was overwhelmingly on account of the dumped imports from other sources not attracting anti-dumping duty at present. The Authority had also found in the said sunset review that there was no likelihood of recurrence of injury to domestic industry if duties were revoked in respect of imports from Spain, Portugal and Italy. Authority also found in this investigation that exports from remaining countries not attracting anti dumping duty, excluding Belarus, were either de-minimis or insignificant. No other material factor that may be a cause of injury has come to the notice of the Authority.

E. INDIAN INDUSTRY'S INTEREST

38. The purpose of anti dumping duties in general is to eliminate dumping which is causing injury to the domestic industry and to re-establish a situation of open and fair competition in the Indian market which is in the general interest of the country.

39. The Authority recognizes that the imposition of anti dumping duties might affect the price levels of the subject goods or the products manufactured using subject goods and consequently might have some influence on relative competitiveness of these products. However, fair competition on the Indian market will not be reduced by the anti dumping measures. On the contrary, imposition of anti dumping measures would remove the unfair advantages gained by dumping practices, would prevent the decline of the domestic industry and help maintain availability of wider choice to the consumers of subject goods. With a view to minimize the impact on the downstream industry, the Authority has considered it appropriate to recommend anti dumping duty based on the lower of the dumping and injury margins. The Authority notes that the imposition of anti dumping measures would not restrict imports from subject countries in any way, and therefore, would not affect the availability of the product to the consumers.

F. CONCLUSIONS

40. The Authority has, after considering the foregoing, come to the conclusion that:

- (i) Acrylic fibre has been exported to India from subject country below the normal value;
- (ii) The domestic industry has suffered material injury;

- (iii) The material injury has been caused by the dumped imports from subject country;

41. It is considered necessary to impose definitive anti-dumping duty on the imports of subject goods. Accordingly, the Authority recommends imposition of anti dumping duty on the imports of Acrylic fibre.

42. It is decided to recommend the amount of anti-dumping duty equal to the margin of dumping or less, which if levied, would remove the injury to the domestic industry. The landed price of imports was also compared with the non-injurious price of the domestic industry, determined for the period of investigation. Accordingly, it is proposed that definitive anti-dumping duties be imposed on Acrylic fibre originating in or exported from the subject country falling under Heading 5501.30 and 5503.30 of the Schedule I of Customs Tariff Act. The anti-dumping duty shall be the difference between the amount mentioned in Col. 9 in the following Table and the landed value of imports of the subject goods in US\$/MT, if the landed value of imports of subject goods is lower than the amount mentioned in column 9 below:

S. No	Sub-Heading	Description of Goods	Specification	Country of Origin	Country of Export	Producer	Exporter	Amount	Unit of Measurement	Currency
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11
1.	5501.30 5503.30	Acrylic Fibre	All Denier	Belarus	Any country	Any producer	Any exporter	1681.35	MT	US\$
2.	5501.30 5503.30	Acrylic Fibre	All Denier	Any country	Belarus	Any producer	Any exporter	1681.35	MT	US\$

43. Landed value of imports for the purpose shall be the assessable value as determined under the Customs Act, 1962 and all duties of customs except duties levied under Section 3, 3A, 8B, 9 and 9A of the Customs Tariff Act, 1975.

44. An appeal against this order shall lie before the Customs, Excise and Service Tax Appellate Tribunal in accordance with the Customs Tariff Act.

CHRISTY L. FERNANDEZ, Designated Authority